श्रीसीतारामचन्द्राभ्यांनमः।

श्रीहनुमतेनमः।

अथ

श्रीरामरसरङ्ग विलास

अर्थात्

अनन्त श्रीमन्महाराजाधिराज अखिलेश्वर साकेताधीश ...रादि वृन्दारक, वृन्द वन्दित, सान्द्रानन्द कन्दाभादिव्य विग्रह मार्त्तण्ड कुल कमल मार्त्तण्ड शरकोदण्ड मण्डित भुजदण्ड नित्य अखण्ड किशोर रत्नसिंहासनासीन सीताकान्त श्रीरामचन्द्र जी के प्रेम उमङ्ग रसरङ्ग रंजित यश युक्त वाग्विलास कवित्त सवैया मंजु छन्द वद्ध पुस्तक।

जिस्को

श्रीसीतारामोपासक अनन्तश्रीराघवेन्द्रसखा स्वामी श्रीकामदेन्द्रमणि जी के शिष्य श्रीरामानन्दीय

श्रीसीतारामशरण रामरसरङ्गमणि जी

श्री अयोध्यावासी नें रचा,

उसीको

ग्रंथकर्ता जी के कृपापात्र पूर्णिया निवासी श्रीमाधवप्रसाद (रसमोदमणि) के प्रेम से जिला पूर्णिया सब डिविजन अररिया के बाबू गोपाललाल सब रजिस्ट्रार के पुत्र बाबू शिवसहायलाल-मुखतार ने निजव्यय से छपवाकर सज्जनों के अर्थ प्रकाशित किया।

बी. एल. पावगी-रामघाट, बनारस सिटी
द्वारा हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित।

संवत् १९६७ आषाढ़। सन् १९१० ई०

पुस्तकालय

अथ ग्रंथ विषय अनुक्रमण सूचीपत्रम् ।

पृष्ठाङ्क	विषय
१	श्रीगुरुइष्टदेव वन्दन मङ्गलाचरण श्लोकाः (१२)
२	श्रीगुरुआचार्य्यवन्दना मङ्गलाष्टक कवित्व (८)
४	श्रीरामनामयशरसरङ्गविलासाष्टक क० (८)
६	श्रीरामरूपरसरङ्ग विलासाष्टक क० सवैया (८)
७	श्रीरामकृपाभिलाष रसरङ्गाष्टक क० सवैया (८) सब । क० ३२
९	श्रीरा[illegible] रसरङ्गविलास आरंभ बालविलास क० २
९	श्रीराममृगया विलास क० (१)
१०	श्रीसीताराम विवाह विलास क० (८)
१२	श्रीअयोध्याकांड क० (६)
१३	आरण्यकाण्ड क० (१२) पृष्ठ १६ में किष्किंधाकाण्ड क० (१)
१६	सुन्दरकाण्ड क० (८) पृष्ठ १८ में लंकाकाण्ड क० (८)
२०	उत्तरकाण्ड क० (११) रामायण सब क० ५७
२[illegible]	छन्द कुंडालिया विनय (३)
२४	श्रीराम अनन्यता अभिलाष स० क० (३)
२४	प्रभु से हनुमत कृत रक्षा मांगना क० १
२५	श्रीराम माधुर्य्यपर सब ऐश्वर्य्य निछावर क० ३
२५	श्रीरामनामाष्टक स० तथा नाम प्रभाव क० ३
२८	प्रभातमंगल क० (२) अन्य दोहा, पद
२९	प्रभुनखशिख और निजसख्यरूपाध्यास क० (११)
३०	श्रीसीतागुण प्रभाव वर्णन क० (६)
३२	काम कामिनी क्रूरता वर्णन क० (४)
३३	विनय और निज दीनता आदिक क० (१४)
३६	मंजु छन्द से विनय और निजसख्यरूपाध्यास (१७)
३९	श्रीरामसख्य उपासना और संप्रदायद्वारा व० क० (३)
४०	श्रीवाल्मीकि तुलसीदासयश क० (२)
४०	श्रीहनुमत यश, परगुरु छप्पै आदिक ग्रंथपूर्ण क० (७)
४२	श्रीरामभहापुरुषलक्षण क० ॥ पृष्ठ ४५ में श्रीराम मंत्रार्थ श्लो.क.
४६	श्रीसीताराम पूजा पचीसी दोहा ॥ पृष्ठ ४८ में तिलक नव क दोहा
	श्री पर गुरु श्रीगुरु परधान यात्रा क० ५ संपूर्ण कवित्त(१८५)

दो॰ महाराज श्रीराम जय, सिय महरानी संग ।
भरत लखन रिपुदवन जय, हनुमदादि रसरंग ॥

जय श्रीरघुवर जानकी, भरत लखन रिपुशाल ॥
हनुमत सह रसरंगमणि, हिय बसिए जनपाल ॥

बन्दौं सिंहासन लसे, श्रीसीता · रघुराज ॥
चँवर छत्र रसरंगमणि, गहि भरतादिक भ्रात ॥

बन्दौं सिय महराज निज, रघुकुलमणि सुखसिंधु ॥
सुमन बराषि रसरंगमणि, निरखहिं विबुध सबंधु ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	११	फल्यो	फैल्यो
१०	५	सना	सेना
१९	३	नाह	नाहिं
२५	२	हठांले	हठीले
२७	२३	अंक अंग	अंक संग
२९	३	तई राम	तेईराम
३३	१४	झंठी	झूंठी
३९	२३	तरेसा	तरेसो
४०	२३	आठ अक्षर व्यर्थ अधिक हैं ।	

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥ श्रीहनुमते नमः ॥

श्रीरामरसरङ्गविलास ।

१८७१७

॥ श्लोकाः ॥

नमो राजाधिराजाय रामाय परमात्मने ॥ सच्चिदानन्दरूपाय श्रीसीतापतये नमः ॥ १ ॥ नमो नादार्धमात्रायै ब्रह्मस्थित्यै श्रियः श्रियै ॥ रामवामाङ्क संस्थायै श्रीसीतायै नमो नमः ॥ २ ॥ नमो ज्ञानसमुद्राय ज्ञानमुद्राविधारिणे ॥ एकाराष्ट्र-रुद्राय रामाय गुरवे नमः ॥ ३ ॥ नमो ज्ञानस्वरूपाय वरविज्ञानदायिने ॥ अज्ञानध्वान्त सूर्याय रामाय गुरवे नमः ॥४॥ नमो मुक्तस्वरूपायाऽविमुक्तक्षेत्रवासिने ॥ भक्ति मुक्ति प्रदायास्मै रामाय गुरवे नमः ॥ ५ ॥ नमो शान्ताय दान्ताय महते मूलरूपिणे ॥ मन्त्रवीजात्मने साक्षाद्रामाय गुरवे नमः ॥६॥ नमोङ्काराय ताराय वेदसाराय साक्षिणे ॥ संसारपरपाराय रामाय गुरवे नमः ॥ ७ ॥ नमः कर्मस्वतन्त्राय जगतःकारणात्मने ॥ तारकब्रह्म-मन्त्राय रामाय गुरवे नमः ॥ ८ ॥ नमो मैत्री निवासाय सर्वलोकाऽभयायच ॥ धीराय सत्यसन्धाय रामाय गुरवे नमः ॥ ९ ॥ सर्वलोक शरण्याय सर्वलोकहितात्मने ॥ सर्वलोकात्मने तस्मै रामाय गुरवे नमः ॥१०॥ नमो वेद्याय महते शुद्धज्ञानाऽध्यये नमः ॥ शब्द-ब्रह्मात्मने तस्मैरामाय

गुरवे नमः ॥११॥ नमः श्रीरामदूताय वायुपुत्रायधीमते ॥ ज्ञान विज्ञान-पूर्णाय कपीन्द्राय हनूमते ॥ १२ ॥

(क० घनाक्षरी)॥ गुरुदेव पदपांसु वन्दौं बार बार है । कमल पराग सो अमल अनुराग पाग भगति-सोहाग सम मङ्गल अगार है । किए भाल तिलक अखिल गुण वस्यहोत दृग दिए दीखै सीताराम-रूपसार है॥ चिन्तामणि पारस हू कामतरु कामधेनु रेनु रेनु ऊपर अमित बलिहार है।रसरङ्गमणी मन्दभागिन सुभागप्रद गुरुदेव पदपांसु वन्दौं बार बार है ॥१॥ गुरुदेव कृपासिंधु मेरे सिरताज हैं ॥ सीता राघवेन्द्र-सख्यप्रद जैश्री-कामेदन्द्र कल्पतरु तारक सुधारक सुकाज हैं। मोसे महानीच हू कौ सींचि भाव भक्ति-जल अमल सुनाए श्रीयुगल-मंत्र-राज हैं ॥ स्व पर स्वरूप कौ लखाइ कलुखाइ मेटि माधुरी चखाइ उभै केलि रसराज है । कीन्हे कीट भृंग ज्यों सुसङ्ग रसरङ्गमणी गुरुदेव कृपासिंधु मेरे शिरताज हैं ॥२॥ (सवैया) ॥ दै उपदेस सुज्ञान सजीवनि जीवन को हरि लेत अनिष्ट हैं। बीज सु मंत्र सुनाय लखावत रामसिया सरवेश्वर इष्ट हैं ॥ रंक धनी रसरङ्गमणी करि प्यावत प्रेम महारस मिष्ट हैं। और कहा महिमा कहिए-मुख श्रीगुरु गोविंदहूते गरिष्ट हैं ॥३॥ (कवित्त) ॥ जै श्रीरामशेषी-शेष रामानुजस्वामी वेष संप्रदाय सिंधुजाके वर्द्धक आचार्यवर । जीव ईश माया चित आचित विशिष्ट-ब्रह्म भाष्यो अष्ट द्वादश षड़क्षर श्रीमंत्र पर॥सेवक सुसेव्य भाव भोग भूत सेवा चाव सीतारामशरण हैं प्रभु अंश जीव भर । रामायण आधार रसरङ्गमणि हार प्यार

केवल प्रपत्तिहीं दृढ़ाये हैं अनन्य तर ॥ ४ ॥ मन्द-कलि-
काल की कुचालते अमन्द पाप फैले पंथ निन्द वेद भक्ति
हूं निकन्द के। देखे रघुनन्द जब सबै जन्तु द्वन्द दले लीन्हे
अवतार तव दायक अनन्द के ॥ सेतु बिसतारे मंत्र तारक
प्रचारे किए जीव भवपारे देह धारक स्वछन्द के। सन्तसिंधु
चन्द ऐसे करुणाके-कन्द रसरङ्गमणी वन्द पद स्वामी रामा-
नन्द के ॥ ५ ॥ प्रकटे प्रयाग भाग कश्यप ज्यों भूसुर के
सातैं कृष्णमाघ मारतंड सो अरामी हैं ॥ काशी से अकाश मैं
प्रकाश सुखरास किये वारहौ सु शिष्य मानों कला तेज धामी
हैं ॥ कलिकी कुचालनिशा खंडहैं पखंडतम दुरिगे अभक्त
चोर पंथ घोर वामी हैं ॥ फल्यो वेध धाम धाम धाम संत
कंज फूले मणिरसरङ्ग रवि रामानन्द स्वामी हैं ॥ ६ ॥
नमो नमो भक्तिमहारानी सुखखानी ज्ञान योग ते महानी
महामहिमा की रासि हो । भवभीति भानी पराप्रीति की
निसानी पंचरसानि सो सानी रसरंगमणि भासिहो ॥
नाशिहो मनोज आदि मोहनिशा दुख दोष हिए सियाराम
जू की सुप्रभा प्रकाशिहो ॥ परम परेश जो निरङ्कुश गजेश
ताहि वस करि बांधिवे की युक्ति प्रीति पाशि हो ॥ ७ ॥ शील
को सुछत्र सिंह आसन क्षमा को स्वच्छ शान्ति शुभ गादी
पै विराजैं भीति भानी हैं। ज्ञान औ विचार चौंर व्यजन
विराग योग लिए चारौ संप्रदा चलावैं मोद मानीहैं ॥
विद्याजू बजावैं वीन श्रुति सांगीत लीन नाचैं नम्रतादि
नटीं समता सु ठानी हैं ॥ परा अनुरक्ति रसरूपा वशयुक्ति

रामरसरङ्ग मुक्ति-शुक्ति भक्तिमहासनी हैं ॥८॥ इति चन्द्रनामङ्गलाष्टकम् ॥ अथ श्रीरामनामरसरङ्गविलासम् ॥

(कवित्त)॥ नामहीं रटत प्रहलाद शुक शौनकादि पुंडरीक पाराशर नारदादि गावहीं । नामहीं रटत रुक्माङ्गदादि भीष्म वलि त्रिजटा विभीषनादि रटैं रामनामहीं ॥ नामहीं रटत धर्मसूनु शिवी रन्तिदेव भरत दधीचि हरिचन्द यश पावहीं । नामहीं रटत रसरङ्गमणी हटै दुख रटै सुख तव जव रामहीं रटावहीं ॥ १ ॥ नामहीं रटत हैं सुकंठ हनुमंत जामवंत अंगदादि अनगन्त कीस राजहीं । नामहीं रटत मुनि लोमस भुसुंडि वालमीक वैनतेय जागवल्क भरद्वाजहीं ॥ नामहीं रटत श्रीवशिष्ठ वामदेव अत्रि गौतम सुतीक्षन अगस्त्य नाम गावहीं । नामहीं रटत रसरङ्गमणी हटै दुख रटैमुख तव जव रामहीं रटावहीं ॥ २ ॥ नामहीं रटत हैं गनेस सेस औ दिनेस विधि अमरेस त्यों महेस रटलावही । नामहीं रटत शुद्धज्ञानी औ विरागी योगी त्यागी सिद्ध साधक सुभागी रामनामहीं ॥ नामहीं रटत हरिभक्त जक्तनेह-त्यक्त दिवानक्त अनुरक्त रूपाशक्त गावहीं । नामहीं रटत रसरङ्गमनी मिलै मुक्ति दूसरी न जुक्ति वेद नामहीं बतावहीं ॥ ३ ॥ नामहीं रटे हैं रामानुज रामानन्द-स्वामी तुलसी-गोस्वामी प्रेमधामी रटे नामहीं । नामहीं रटे हैं कीलदेव अग्रदेव नाभा नामदेव कवीरादि सवै भक्त गावहीं ॥ नामहीं रटे हैं चारि संप्रदा अनंत-संत पंथ अनपंथ ग्रंथ नाम के वनावहीं । नामहीं रटत रसरङ्गमनी मिलै मुक्ति दूसरी न जुक्ति वेद नामहीं

बतावहीं ॥४॥ नामहीं रटत कलिकलुष कटत सुख सटत सुभक्त जीव मुक्तिपद पावहीं । नामहीं रटत रामरूपरति प्रगटत घटत कुचाम–वाम प्रीति परिणामहीं ॥ नामहीं रटत रामलीला लखि लोभै मति तन धन लोकलीला नहीं मन भावहीं । नामहीं रटत रसरंगमनी प्रेमानन्द पावैं जीव जोप मन नाम मैं जुटावहीं ॥ ५ ॥ नामहीं रटत रामधाम ध्यान वास मिलै मानसी सुप्रीति पूजा झिलै चित्त चावहीं । नामहीं रटत भव–विषया विरति होति मायागोति काम मद दंभ न सतावहीं ॥ नामहीं रटत रसभावना सुभाग जागै भालकी कुभाग भागै राम प्यारे लागहीं । नामहीं रटत रसरंगमनी पराभक्ति पावैं जीव और जुक्ति सपनें न पावहीं ॥ ६ ॥ नामहीं मै रूपराम नामहीं अनूप धाम नामहीं में गुणग्राम प्रभुता सु नामहीं । नामही में भाव भक्ति नामहीं में रस-व्यक्ति नामहीं में प्रेमी ज्ञानी प्रेमा परा पावहीं ॥ नाम को प्रभाउ एक जानैं रघुराउ शिव हनुमत आदिक कौं आपुही जनावहीं। "सीतारामशरण" चरण परि मागै वर रसरङ्ग सीताराम नामहीं रटावहीं ॥ ७ ॥ गंग सम नीर अरु सिंधुसो गँभीर नाहिं धीर काममर्दन सो वीर नाहिं कामसो । शुकसो न संत और ऋतु है वसंत सो न वली हनुमंतसो न दायावन्त राम सो ॥ हितू सतसंगसो न और रसरंगमनी मुखसो न अंग ना कुसंग वामचामसो । तंत्र पंचरात्रसो न तंत्रीसो न जंत्र आन मंत्री न सुमंत्रसो न मंत्र रामनाम सो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

नामप्रभाव अपार अति मति मन वाणी पार ॥
गुरु करुणा रसरङ्गमणि अष्टक कियो उचार ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीरामरूपरसरङ्ग विलास ॥ (सवैया)।

जो विनुपायँ चलै विनुकान सुनै करहूंविनु कर्महिं कार है। भोगी सवैरसको रसना–विनु–आनन–वानि वड़ो वकतार है ॥ घ्राणविना जो सुगंधहिं लेत निकेत विना परसै सुख-सार है। सोइ हितू रसरंगमनी सियजीवन श्रीअवधेश–कुमार है ॥ १ ॥ जो विभुकौ विभु व्यापक–व्यापक व्यूहकौ व्यूह विराट अधार है। निर्गुण निर्गुणकौ गुणिहू गुणि जो निराकारहुँ कौ निराकार है। ब्रह्म अनादि अनादिहुँ कौ अवतार अनेकन्न कौ करतार है ॥ सोइ हितू रसरंगमनी सियजीवन श्रीअवधेश–कुमार है ॥ २ ॥ जो वड़ते वड़ सूक्षम सूक्षम रूपकौ रूप अखंड अपार है। चेतन–चेतन आँनद–आँनद सत्यकौ सत्य सवैमिलि न्यार है ॥ दूरते दूर नजीक नजीक ते नीक ते नीक अनीक पसार है। सोइ हितू रसरंगमनी सियजीवन श्रीअवधेश–कुमार है ॥ ३ ॥ जीव कौ जीवन प्राण कौ प्राण अनेक अनेक कौ एक अकार है। जो अधते अध ऊंचते ऊँच समूँच कला अकला सुखसार है ॥ पूरुष पूरुष कौ प्रकृती पति त्रैगुण त्यों महदादि–अधार है। सोइ हितू रसरंगमनी सियजीवन श्रीअवधेश–कुमार है ॥ ४ ॥ जाहि कहैं शिव शैव सवै पुनि ब्रह्म विदांति कहैं गुणपार है। बौध सुबुद्ध कहैं जेहिको मत न्याय सुवादि कहैं करतार है ॥

जैन कहैं अरहंत मिमांसिक कर्म सु पूरुष सांख्य विचार है।
सोइ हितू रसरंगमनी सियजीवन श्रीअवधेश-कुमार है॥ ५॥
जो निजभक्तन मोद-निमित्त सु नित्य चरित्र करै श्रुतिसार
है। एकमुनी शतकोटि कहे जस गायक तैसे अठासि हजार
हैं॥ शील सुभाव सराहहिं शत्रु सदाशिवकौ जेहि नामअधार
है। सोइ हितू रसरंगमनी सियजीवन श्रीअवधेशकुमार है
॥६॥ जो धरि बाल स्वरूप अनूपम भूपति अंक हँसै अति प्यार
है। बंधु सखा सब लै धनुहीं शर खेलत डोलत औध बजारहै॥
है वर वाजि-सवार सखानुज संग सिकारते आवै अगार है।
सोइ हितू रसरंगमनी सिय जीवन श्रीअवधेश कुमार है ॥७॥
जो मुनि-यज्ञ सुधारि उधारि अहल्या पुरी मिथिला पगुधार है।
तोरि धनू भृगु को मद मोरि विवाहि सहानुज आय अगार है॥
कै बहु लीला प्रमोदविपीन रमै जो रसेश अखंड विहार है।
सोइ हितू रसरंगमनी सियजीवन रामदयाल उदार है ॥८॥

इति श्रीरामरूपरसरङ्गाष्टकम्।

अथ श्रीरामकृपाभिलाष रसरङ्गाष्टकम्।

देवन रावन को दुख रोय कहे अवतार लिहौ रघुराई।
मातु पिता अनुशासन के मिसु कानन कौ गवन्यो वरिआई॥
दंडक वासिन कौ सुनिकै दुख दुष्टन दंडदिहौ दोउ भाई।
काह करो रघुवंश-मणी-रसरङ्ग कि वार कृपा कृपणाई॥ १॥
गौतम की घरनी करनी जगजान पषान ते नारि बनाई।
केवट कोल सखा करते भरते भुज अंक न भै सरमाई॥ दै बल

बुद्धि करायहु काज भयो हनुमान ऋणी रघुराई । काहे करो
रघुवंश-मणी-रसरङ्ग कि वार कृपा कृपणाई ॥ २ ॥ और
सुकंठ विभीषण आदि अभै करते नहिं बेर लगाई । गीध
अगाध-अघी सु उधारि सराध किहौ पितु की समताई ॥
स्वादभरी सवरी वदरी खुलि खाय दिहौ गति मातु कि नांई ।
काहे करो रघुवंश-मणी-रसरङ्ग कि वार कृपा कृपणाई ॥ ३ ॥
कीस सुकंठहिं कंठ लगायहु वालि विदारेहु वैरि कि नांई ।
वैरि को बंधु विभीषण वालिस पालि कियो करुणा अधिकाई ॥
मारि सबंधु दशानन देवन दीन्हेहु दान अभै सुखदाई ॥
काहे करो रघुवंश-मणी-रसरङ्ग कि वार कृपा कृपणाई ॥ ४ ॥
नीचहिं मारि महीसुर वाल जिवाय दिहौ जग कीरति छाई ।
स्वान कहे जातिको गजराज चढ़ाय दिहौ पुरते निकराई ॥
औध के सूकर स्वान प्रजान दिहौं वर मुक्ति सुधाम वसाई ।
काहे करो रघुवंश-मणी-रसरङ्ग कि वार कृपा कृपणाई ॥ ५ ॥
देखि परै अवतारन में करुणा सो तुम्हारिहिं वेदन गाई । पूत
के सामिल नाम अजामिल लेत लह्यो गति दिव्य सोहाई ॥
वारनहूँ को उवारत वार न लाग अकारनहीं करुणाई । काहे
करो रघुवंश-मणी-रसरंग कि वार कृपा कृपणाई ॥ ६ ॥ मेटि
दिए प्रहलाद विषाद कढ़े नरकेहरि खंभते आई । द्रौपदि
आपदि दूर किए द्रुत दौरि दुकूल दिए जदुराई ॥ व्याध
अराधन कौन कियो जु सदेह दियो निज लोक पठाई ।
काहे करो रघुवंश-मणी-रसरङ्ग कि वार कृपा कृपणाई ॥ ७ ॥
दीनदयाल दयाहिंते केवल ज्ञानिन की गणिका गति पाई ।

दास कवीरहिं पावक नीर गजादिहुँ ते प्रभु लीन बचाई ॥
जौन सो कौन रहा जग वाम हराम कहे पदराम मिलाई ।
राम कृपाल कृपा करि लीजिय त्यों रसरंगमणी अपनाई ॥
॥ ८ ॥ ३२ ॥ इति श्री रामकृपा प्रार्थनाष्टकम् समाप्तम् ॥

अथ श्री रामायण रसरङ्गविलासम् ।

श्रीमते रामभक्ताय सुकविवंशावतंशाय सकल कलि-कलुषविध्वंसिने गोस्वामिने तुलसीदासाय नमः ॥ कवित्त ॥ आज महामंगल औधेश महाराज द्वार बाजत नगारे भारे सुख की उमङ्ग सों । प्रगटे कुमार चार रूप गुण पारावार शोभा के अगार प्यारे गौर श्याम अङ्ग सों ॥ वन्दी जस गावैं देव फूल बरसावैं नाना दान द्विज पावैं देत भूप मन दङ्ग सों । अम्बन की गोद लाल मोद के कदम्ब सो हैं जो हैं रसरङ्गमणी रँगे रामरङ्ग सों ॥१॥

अथ बाललीला विलास ।

ललित ललित राम भरत सु श्यामल हैं ललित सु गौर लछिमन शत्रुशाल हैं । ललित ललित पट भूषन ललित वान धनुहीं ललित बाहु लोचन विशाल हैं ॥ ललित सखासमाज संग रसरंगमनी बोलत विलोकत चलैं ललित चाल हैं । ललित लखत अवधेश औ अवधवासी ललित ललित विहरत चारो लाल हैं ॥ २ ॥

अथ मृगया लीला विलास ।

हरे हरे वसन विभूषन किरीट धारे हरे हरे चाप वान करन सुधारते । हरे हरे साज साजे वाजिन पै राजैं मंजु हरे हरे हँसत वतात पगे-प्यारते॥हरी हरी शोभा मन लोभा रसरंगमनी पुर-

वासी अम्बा अवधेशजू निहारते। सरयू सुकूल-वन सखन समेत खेलि चारौ सुकुमार चले आवत सिकारते ॥ ३ ॥ ❋ ॥ अथ श्री सीताराम विवाह विलास ॥ ❋ ॥ कौशिक मुनीश मखकाज कौशलेशजू सों मागिकै लिवाय चले सानुज श्री राम को। ताडुका कौ ताड़ि आय यज्ञ में सुवाहु सना जारिकै मरीचै दूर डारे महावाम को ।। मिथिला पधारे मग गौतम की नारि तारे गंगा को नहाय गए मिथिलेश–धाम को । पूजि विश्वामित्र सो विदेह बूझे रसरङ्ग जाने अवधेश के कुमार गौर श्याम को ॥४॥ कौशिक निदेश लैकै राघव-लखन-लाल चले पूरचन्द्रमासे दोऊ दरशतु हैं। बालक विलोकि शोभा लागे संग मन लोभा प्रीति के वचन बोलिपाणि परसतु हैं॥ देखैं छवि नारि नर वृन्द रसरंगमनी जानि सिया जोग बर हिए हरसतु हैं। परम प्रसंस तीनौं लोक अवतंसनपै राजहंस वंशन पै मोती वरसतु हैं ॥५॥ (श्री सियावचन) जबते विलोचन विलोक्यों बाग बीच छवि तवहींते मन मीन परो प्रेमकूप मैं। भई भृङ्ग-कीट-गति मति रसरंगमनी जहां देखौं तहां दृगश्याम सुतभूपमैं ॥ पिताहूते प्रवलपतिव्रत कौ मेरो पन पूरिहैं पिनाकीपति पाइहौं अनूपमैं । चाप चाहै टूटै या न टूटै परि मेरे प्रान सबही सों टूटि जूटे प्यारे रामरूप मैं ॥ ६ ॥ शंभुचाप भंजि मिथिलेश मन रंजि भृगुनाथ गर्व गंजि सिया विश्वविजै पाए हैं॥ गवनी वरात मिलि पितु प्रिय भ्रात भयो व्याह शुभदात सुखसिंधु उमगाए हैं॥ विदाभै जनेत मग जन सुखदेत सब भाइन समेत राम ब्याहि घर आए हैं। माता मोद छाए सुत वधू दुलराए रसरङ्ग हरषाए सो उछाह जस गाए हैं ॥ ७ ॥

जनककिशोरी जू के जावक रचनकाज नांउनि नवेली आई अतिहीं उतावरी । धोवाति धवल जल भरिकै परातमाहिं पद-जलजाततल जीते जे गुलावरी ॥ परे प्रतिबिम्ब विम्वरंग रस-रंगमनी होत वारि फेरि फेरि लावै भरी चावरी । दैचुकी कि देनो ऐसो करांत विचार उर वावरीसी भई लिए करमें महावरी ॥८॥ (दो०) रूपराशि सिय को लखत रती रतीभर होय ॥ उमा रमा मासा समा तिल तिलोत्तमा सोय ॥ १ ॥ निकट वशिष्ठजाके कानन अशोक सोहै मोहैं मन कल्पवृक्ष लगे खंड खंड हैं । ललित लतान की निकुंज छविपुंज फूलीं गूंजें अलि कोकिल मयूर सोर मंड है ॥ रमैं सखी सखन समेत नित्य सीताराम "मणिरसरङ्ग" मोद मेघ कौ घमंड है । अवध सुवाग में मनोहर महान प्यारो सुखद श्री सीताकुंड मंडित अखंड है॥९॥

सवैया—लोचन लाल के लोभी अली लालें कंज विलोचन श्यामल फूले। आनन श्रीरघुनन्द को चन्द सियाचख चारु चकोरक भूले॥ जानाकि जानकिजान कि जान पियारी के प्रीतम प्रान समूले। यों रसरङ्गमनी के हिया सेजिया वसिया रसिया समतूले ॥१०॥ ❋कवित्त❋॥ राजैं सिंह आसन पै अभिराम सीताराम लाजैं लखि सोमकाम कोटि मारतंड हैं। भ्राजैं श्री भरत शत्रुसूदन लखनलाल हनुमन्त मंत्री मित्र दास सखा मंड हैं ॥ छाजैं छत्र चौंर चहूं ओर और साज लिए चाप वाण असी राजमाधुरी घमंड हैं। पान को पवावै रसरङ्गमणी गावै जस ध्यावै अस अवधविहारी को अखंड है ॥ ११ ॥

इति बालकाण्डम् समाप्तम् ॥

अथ श्रीअयोध्याकांडारंभः ॥

कवित्त—अवध वसत विहरत सीतारामजू कौ बारह वरष बीते विपिन अशोक में । नाना के नगर रहे भरत तवहिं भूप देन चाहे जुवराजी रामहिं विशोकमें ॥ कैकई वचन सुनि लखन सिया लै संग राम वन गवने तजे स्वजन शोकमें । प्रभु चित्रकूट शैल वसे रसरंगमनी रामविन वसे अवधेश इन्द्रलोक में ॥ १२ ॥ भरत भवन आय दुखी पितुक्रिया करि सबकौं लेवाय संग चित्रकूट चले हैं । पेखे रसरंगमनी शृंगवेरपुर प्रिय नेह-सौं निषादकौं मिले लगाय गले हैं ॥ तरि गंगा जमुना वि-लोके शैलशृङ्ग दृग रोके न रहत अनुराग शोक दले हैं ॥ शील के सुजान रामभगति-निधान भव भए न भरतके समान भाई भले हैं ॥१३॥ प्रभु पदकंज पेखि पुहुमी में परे मानो गतमणि फेर फणि ग्रहण करत है । प्रेमानन्द पूरि भूरि उर न समात रोम रोम पुलकात नीर नैनन झरत है ॥ विधि शिव अगम सनेह उभै भाइन कौ भावै "रसराम" मुख कहि न परत है । भेटत सु भुज भरि तन मन भान भूले भरत श्रीराम भए राम भे भरत हैं॥१४॥ धरम भरत शुभकरम भरत शील सरम भरत अधरम निदरत हैं। भक्ति कौ भरत अनुरक्ति कौ भरत सु विरक्ति कौ भरत दुख युक्ति सौं हरत हैं॥ज्ञान कौ भरत रामध्यान हू भरत रस-रङ्गमाणि अभिमान दूरहीं करतहैं । छेम कौ भरत नामनेम कौ भरत रामप्रेम कौ भरत विश्वभरन भरत हैं ॥ १५ ॥ मिले सब जथा जोग सुने प्रभु परलोक पितु गे सशोक भे ज-लादि दान किए हैं। चलिए अवध कहे कोटि भांति भरतादि

राम समुझाय फेरे पदपीठ दिए हैं॥ वसे नंदिग्राम रामपादु-
का को राजा करि पूजैं रसरंगमनी प्रेम ब्रत लिए हैं। धन्य श्री
भरत रामनाम उचरत नीर नैनन ढरत सीताराम ध्यान हि-
ए हैं॥ १६॥ प्रेममयी डोलनि सुप्रेममयी बोलनि है प्रेम
अनमोलनि सुनाम उचरत की। प्रेममयी अकनि सु प्रेममयी
तकनि है प्रेममयी छकनि छकावनि तुरत की॥ प्रेममयी
मूरति सु प्रेम उर पूरति त्यों "रसराम" सूरति कभूँ न विसरत की।
प्रेममयी सुमति श्री रामप्रेम उमगति दायिनी सुगति धन्य
भगति भरतकी॥१७॥ इति श्री अयोध्याकाण्डं सम्पूर्णम्॥

अथ आरण्यकांडारंभः॥ कवित्त॥

राम चित्रकूटते चले मिलत अत्रिकाहिं वधे कुविराध
गाड़े भूमि ताके अङ्ग को। आए सरभङ्ग पाहिं मुनि मिले
पूजि मागे भक्तिवर देंह दाहि तजे सव सङ्ग को॥ ऋषिन के
अस्थि लखि निशिचर मारिवेकों किए कृपासिंधु पन अति
हीं अभंग को। गवने लखन सिया सङ्ग राम रसरङ्ग सुमिरि
सुतीच्छन के प्रेम के प्रसंग को॥ १८॥ सुने सिया राघव
लखन चले आवत हैं तुम्हैं प्रभु अवहीं मिलैंगे मोद मांचि
मांचि। उठे अकुलाय चले धाय पुलकाय हिए-कहैं विधि
सपनो कि सुनी सोई सांचि सांचि॥ सूझत न वाट छके
नेहमें निराट मन मोद उदघाट रसराम रङ्ग रांचि रांचि।
रामप्रेमी तीच्छन सुतीच्छन विचच्छन वहत आँसु ईच्छन
सुगुण गावैं नांचि नांचि॥ १९॥ (सवैया)॥ निज दीन

दयाल सुभावहिंते दिशि-दीनहिकी झिलिहैं झिलिहैं। दुखसङ्ग-
वँधो रसरङ्गमनी भवबंधनते ढिलिहैं ढिलिहैं ॥ सुख साधन
ज्ञान सरोज सबै रविराम लखे खिलिहैं खिलिहैं । करुणा करि
सानुज जानकि जान सुजान हमैं मिलिहैं मिलिहैं ॥ २० ॥

॥ पद-सुतीक्षण मनोरथ कौ ॥

अहो आज हमैं राम-कृपासिंधु मिलैंगे । प्यारे सांवरे शरीर
धारे मुनिवेष वीर प्रिया बंधु दुहूंतीर मेरी ओर झिलैंगे ॥ परिहौं
धरि पाय धाय जुगल करन सौं उठाय हरषि हिए लाय बड़ीबार
लौं न ढिलैंगे । सुनिहैं रसरङ्गमनी कान वानी मंजु भनी रघु-
वर दिनमनी देखि नयन कंज खिलैंगे ॥ ❋ (कवित्त) ❋
सुने राम आवत तुरत उठि धावत भे मनमें मनोरथ उठावत अ-
मान हैं । श्याम गौर गाता दोऊ भ्राता हे विधाता क्या मि-
लैंगे सुखदाता जनत्राता प्रियप्रान हैं ॥ नेहसौं नटत गुन ग्रन
को रटत कभूं पीछे को हटत हिए प्रभु प्रगटान हैं । भूलि तन
भांन बैठे थिर मगथान छाके रसराम ध्यान सौं सुतीच्छन
सुजान हैं ॥ २१ ॥ दसा देखि सुखपाए प्रभु पास चलिआए
बहुत जगाए पै मुनीश नहीं जागे हैं ॥ मृदु मुसकाए दुति
दुभुज दुराए भुज चारि दिखराए सो निहारि ध्यान त्यागे
हैं ॥ आगे लखि लोचनाभिराम "रसराम" श्याम सानुज
सवाम मोदपागे पगलागे हैं । नाथ नेही हाथन उठाय उर
लाए उभै-प्रान प्रिय पाए अङ्ग अङ्ग अनुरागे हैं ॥ २२ ॥
आश्रम में आने पूजि अस्तुति बखाने ऋषि रूपानन्य
भक्ति मागे पाए भाग भले हैं। तहांते पधारे प्रभु मिले श्री अ-

गस्त्यजू को आयुध औ आज्ञा लिए पंचवटी चलेहैं ॥ गीध-राजै गौरव दै पंचवटी कुटी वसे राकसी विरूपे खरदूषणादि दले हैं । मायाके कुरङ्ग सङ्ग गए रसरङ्ग राम रावण हरण कियो सिया छाया छले हैं ॥ २३ ॥ जाति के निषिद्ध मास भक्षक अशुद्ध अवधेश-धर्मवृद्ध सखा किए निज शुद्ध हैं । पातकपिनद्ध वली रावण अबुद्ध मूढ़ कालपास वद्ध कियो करम विरुद्ध है ॥ सुनत सनद्ध जुरे रसरङ्ग जुद्ध सिया छीनि लिए क्रुद्ध परे पंखविन विद्धहैं । राम कृपारुद्ध दिए प्रेमते प्रबुद्ध धाम सुख को समृद्ध धन्य श्रीजटायू गृद्ध हैं ॥२४॥सवैया॥ शवरी सपनो लखि सोय उठी फरकैं भुज वाम विलोचन हैं । गुरु की वतिया सुधिकै कुटिया निज लीपि कियो शुचि सो छन है ॥ रसरङ्गमनी फल लेन चली मनमोद मनोरथ रोचन है । मिलिहैं मोहिं राम गरीब निवाज सदा दुख शोच विमोचन हैं ॥२५॥ (कवित) गोद धरि गीध को कृपानिधान जानकीश नैन जलजात जल सींचे सुखधाम हैं । पिता-अवधेशजूते अठगुनी प्रीति युत देह कौ जराय दियो जल पिंड राम हैं ॥ चले दोऊ बंधु पंथ काटिकै कबंधवाहु किए दिव्य तन आए शवरी के ठाम हैं । देखि लपटानी पद प्रेमरसरङ्ग सानी आश्रम में आनी पूजे पूरे मन काम हैं ॥ २६ ॥ (सवैया) प्रभु चाहत हैं निह केवल भक्ति न चाहत रूप कुलै वल हैं । रसरंगमनी चलि भीलिनको निज मातु समान मिले कल हैं ॥ रघुनन्दन भाव सु भूख भरे फल खाय अघाय पिए जल हैं । शवरी के सुप्रेम पगे भल ए फल हैं कि चहूं फल के फल हैं ॥२७॥ (क०) कछू चूक परी ताते नीच जोनि धरी तऊ ऊंचे ओर

दरी हीन जाति पांति न वरी। सन्तसेवा करी मुनि रामभक्ति भरी प्रेमपथ अनुसरी भई प्रीतिरीति जवरी ॥ आए रामहरी देखि लागी आंसु झरी आशा वेलि सुखफरी भूली तन मन खवरी। रसरङ्ग बदरी सुधाको स्वाद निदरी सो खाए राम अदरी औ माने मातु शवरी ॥२८॥ इत्यारण्यकाण्डं संपूर्णम् ॥

शवरी सुगति दैकै चले लछिमन राम हनुमान मिलिकै सुकंठ सो मिलाए हैं। प्रभु वालि वधिकै सुगल को कपीश कियो तिन्ह सीता खोजिवे कौ कपिन पठाएहैं ॥ दक्षिण में हनुमान अङ्गदादि हेरि हारे सिया को संपाती गीध लंका में बताए हैं। संसै सिंधु लंघन में भाषे कीस रसरङ्ग तवै जामवंत हनुमंत बल गाए हैं ॥ २८ ॥

इति किष्किंधाकाण्डम् ॥

॥ अथ सुन्दरकाण्डारंभः ॥

वैन जांबवानजू के सुने कीस कान उर अतिसै सोहान कियो रूप बेप्रमान है। वीर बलवान बोल्यो वचन प्रमान सिया देखिहौं निदान मेरो मन हरषान है॥ यों करि बखान चढ़ि शैलपै सुजान कूद्यो सिंधु आसमान रसराम सुखदान है। कियो घमसान गयो रावण मकान रामदूत हनुमान रामवान के समान है ॥ २९ ॥ सुरसा सुधार्‍यो "हनू" सिंधिका सँघार्‍यो जाय-जानकी निहार्‍यो अक्ष मार्‍यो जार्‍यो लंक को। चूडामणि पायो सिंधु कूदि फिरि आयो कपि मरत जिवायो हाल गायो गढवंक को ॥ पद शिर नायो सुधि सीता की सुना-

यो भायो भक्ति वर मांग्यो दास कुमुद मयंक को॥सिंधुतट गए सेन संग रसरंग राम सुने महासंका भई रावण निसंक को॥२९॥
लंकपति सभा बैठ मंत्रिन सों मंत्र बूझै कहैं ते कुमंत्र कसे कम्मर मरण में ॥ बोले श्रीविभीषण जू सुनो बात हित तात सीताजू को सौंपि परो प्रभु के चरण में ॥ सुनत रिसान खल कियो बंधु अपमान लियो चाहैं रस राम प्राण तासु रणमें। कालवस जानि दशभाल को श्रीरामभक्त आए प्रेमछाएँ राजाराम के शरण में ३०

॥ सवैया ॥

देखि सु दूरहिंते दोउ भ्रात विलोचन आनँद दान के दाता। फेरि विलोकि महाछविधाम खड़ो पलरोंकि जु रामहिं राता॥ वाहु प्रलंव सुअंवुज लोचन मोचन भीति सुश्यामल गाता। सिंह सुकंध उरायत आनन श्रीरसराम प्रमोदन माता ॥ ३१ ॥

(दो०) भक्त विभीषण जोरि कर सब वानरन सुनाय ॥
प्रभु विश्वास वढ़ाय उर कह्यो वचन हरषाय ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥

वधि वालि सुकंठ सखा सु कपीश किए जगमें जस जागत है। अस स्वामि सुशील सुभाव सुने रसरङ्गमनी मन पागत है॥ सवलोक-शरण्य महा प्रभु राघव देहु अभैवर मागत है ॥ करि देहु निवेदन वेगि विभीषण पास खड़ो शरणागत है ॥ ३२ ॥
वंश निशाचर जन्म विभीषण नाम दशानन को लघु भ्राता। पाप परायण तामस देह जथा तमनेह उलूक जु राता ॥ कान सुन्यों जस त्यों रसरङ्ग प्रभू भवभीति विभंजन त्राता ।पाहि कृपानिधि श्रीरघुवीर सदा शरणागत के सुखदाता ॥ ३३ ॥

(दो०) प्रभु पूछे सुग्रीव कह निग्रह करिए नाथ ॥
कृपासिंधु बोले वचन भरे अनुग्रह पाथ ॥ २ ॥

सवैया—आवहिं मित्र सु भाव गहे न तजौं तिन्ह काहिं जथा खग अंडा। जो रसरङ्ग सदोष तऊ अपनाय हरौं सब पाप प्रचंडा॥ जांचहिं एकहुँ वार प्रपन्न कहैं तुम्हरो रघुवीर अदंडा। देउँ अभै सब प्रानिन कों यह है हमरो व्रत एक अखंडा ॥ ३४ ॥

(दो०) आनहु वेगि हरीश हम दिए अभय यहि काहिं ॥
होइ विभीषण वा स्वयं तजौं रावणै नाहिं ॥ ३ ॥

कवित—दिए अभैदान राम कृपा के निधान परे पांयन सुजान रामभक्त जातुधान हैं। भरिकै भुजान प्रभु भेंटे मानिप्रान कीन्हे राजा भगवान जाने भरत समान हैं ॥ सुखी हनुमान देखि दीनसनमान किए जै जै जसगान रसरङ्ग हरषान हैं। स्वामी शीलवान के सुभाव पै निदान पाय मोद वेप्रमान सो विभीषन विकान हैं ॥ ३५ ॥

इति सुन्दरकाण्डम् संपूर्णम् ॥

करुणानिकेतु नल सेतु तें उतरि सिंधु अंगद वसीठ दशकंठ पै पठायो है। मीचुवस नीचु नहीं मान्यों कपि घेरे लंक लरे कीस निशिचर घोर सोर छायो है॥ कुमुख अकंपन प्रहस्त आदि जूझे खल रावण हू हारि कुंभकर्ण को जगायो है। मारे घटकर्ण काहिं राम रसरङ्ग तव जङ्ग कियो रामानुज रावणकोजायो है ॥ ३६ ॥

(दो०) महा शक्ति लछिमन हिए लागी लखि रघुराय ॥
करुणासिंधु विलाप मिसु वचन कहे विलखाय ॥ ४ ॥

(स०) ॥ लच्छन लाल विचच्छन सूर तुम्हारि कवी कल कीरति गैहैं । त्यों रसरङ्गमनी मम प्रान सही अबहीं तुम्हरे ढिग ऐहैं ॥ मो विनु मीत सुकंठ जियै नाह वानरहू वनमाहिं समैहैं । हाय हिए अति शोच यही अब कौंन के भौंन विभीषन जैहैं ३७

(दो०) मारुत सुत मनते चटक जाय सजीवनि ल्याय ॥
राम प्राण प्रिय लखन को सुखी कियो शिरनाय ॥५॥

कवित्त–जैसो इन्द्रजीत वीर अतिहीं अभीत तैसो महावली रामानुज दोऊ रण दक्ष दक्ष । जुद्धत विरुद्ध क्रुद्ध रुद्धैं एक एकन कौ कहैं कैतो भाग ना तो जमलोक गच्छ गच्छ ॥ उद्धत प्रताप चाप खैंचि रसरङ्गमणी छाँड़े लक्ष जोरि शर लक्षमण लक्ष लक्ष । राघवको बंधु मेघनादै मारि लाघव सों समर उछाह छाको छैकियो विपक्ष पक्ष ॥ ३८ ॥ रोषे रणधीर रघुवीर अरि वीरन पै तजत शरासन को तानि शर झर झर । मारैं रसरङ्गमणी रावण-अनी के सूर केते होत चूर चूर केते अंग जर जर ॥ धावैं विना सीस धर सीसपेरै धरा पर करै चहूंओर सोर मार मार धर धर । केते वाण लागे प्रीतिप्राण हीं के पागे भट रणभूमि त्यागे भरि भीति भागे भर भर ॥ ३९ ॥ गगन के अनुहार गगन है निराधार सागर अकार एक सागर महान है । अथवा अकाश सम अम्बुधि वखान करैं अम्बुधि को कहैं उपमान आसमान है ॥ ऐसो आदि काव्य को प्रसङ्ग रसरङ्ग ताते कछू राम रावणै की समता निदान है । उपमा न आन कियो आदिकवि गान राम रावणको जुद्ध राम रावणै समान है ॥ ४० ॥ धारि दशसीस–भुजवीस दश हाथन सौं दश धनुतानि तजै वीर वाण

जालको। कीसन के सीसन को काटै महिपाटै कपिकहैं प्रभुपाहि दया लागी है दयालको ॥ आपहू सु चाप गहि दाप लहि रसरङ्ग मारे सउमङ्ग शर देवन के काल को। रावणके वीस भुज राघव दुभुज काटे लाघव भो दशगुणो दशरथलाल को ॥४१॥ दोऊ महारथ दोऊ कुशल समरपथ दोऊ अस्त्र सस्त्रगथ ज्ञाता रणधीर हैं। दोऊ वाण मारैं दोऊ काटिकै पवारैं दोऊ अस्त्र सस्त्र डारैं औ निवारैं मनथीर हैं ॥ दोऊ वली बांके छेदैं सारथी पताके दोऊ जुद्धरस छाके न गनैं शरीर पीर हैं। खंडे भुजवीस दशसीस रसराम एक वीर ब्रह्मअंड में अखंडरघुवीर हैं ॥ ४२ ॥ मारि दशकंधरै विभीषण को राजदिए ऋक्षकपि ज्याए देवफूल बरषाए हैं। सीता दै सपथ राम सङ्ग रसरङ्गमणी राजैं देखि नैनवंत ब्रह्मानन्द पाए हैं॥वानर विभीषण समेत चढ़ि पुष्पक पै चले प्रभु पंथ थल प्रियहिं देखाए हैं। आए श्रीअवध भरतादि उर लाए मिलि मातु पुरवासिन के दुख विसराए हैं॥ ४३ ॥

इति युद्धकाण्डम् सम्पूर्णम् ॥

अथ उत्तरकाण्डारंभः ॥ कावित्त ॥

राजैं महाराज रघुराज राज आसन में भ्राजैं आस पासन में भरतादि भ्रात हैं।छाजै वामभाग में सोहाग अनुराग भरीं महारानी जनक-किशोरी गोरी गात हैं ॥ वाजैं दिवि-दुन्दुभी सुजस वन्दी वेद गाजैं वरषैं सुमन कहैं जैजै सुरव्रात हैं। साजैं साजि सार्‍यो गुरु तिलक तिलोकसुखी लखि रसरंगमनी छवि न अघात हैं ॥ ४४ ॥ भरत सुछत्र चौंर लखन सुकंठ लिए वेत्र

वायुलाल त्यों व्यजन शत्रुशाल हैं ॥ धोर धनु वाण कों विभीषण निषाद-राज लीन्हे शक्ति अंगद लिए खड़ग ढाल हैं ॥ जाम्बवान पान पीकदान रसरंगमनी लैकै निजसेवा शोभा निरखि निहाल हैं। राजैं राज आसन में महाराज सीताराम लाजैं अंग अंग लखि रति काम जाल हैं ॥ ४५ ॥ तीनौ लोक जीतिकै लिखायो जो विजैको पत्र मारिकै मिलाए तौन रावण को रद्दी मै। मुनि मोद पाए देव दिव्यसुख छाए रसरंग जस गाए हरषाए हिए हद्दी मै ॥ भरत सु छत्र लाए लखन चलाए चौंर व्यजन डोलाए शत्रुशाल शोभा सद्दी मै। संजुत समाज साजे भूषन दराज सीतासङ्ग रघुराज आज राजे राजगद्दी मै ॥ ४६ ॥

॥ अथ बन्दीरूप वेदस्तुति ॥

मंडित महानन में देवतिय-तानन में सुनियत गानन में कानन आरामकी। सुकवि सुजानन में सारदा वखानन में पोथिन पुराननमें-पूरी अभिराम की ॥ सरदनिशानन में लोक आसमानन में दीपति दिशानन में दानन में श्यामकी। शेष-सहसानन में रसरङ्ग प्रानन में छाई कंजकानन में कीरति श्रीराम की ॥ ४७ ॥ सरद घटान पर चन्द्रकी छटान पर सुरमुकुटान पै अँटा पै ध्रुव-धामकी। सारदा रटान पर छन्द उघटान पर शास्त्रहूं षटान पै शिखा पै वेदसाम की ॥ सूर सुभटान पर सन्त निकटान पर काव्य प्रगटान आदि कवि अभिराम की। शंभु के जटान जटी-तटनीतटान पर नटै रसरङ्ग नटी कीरति श्रीरामकी ॥ ४८ ॥ कल्पतरु कानन सी कामरिपु आनन सी कुलिस सी काटनी है कुधर कलेश की। केवरा सी कुन्दसी कदम्बकु-

सुमान सी कपूर सी सुकान्ति सी कुमुद कोश देशकी ॥ कमल सी कमला सी कलाधर कौमुदी सी कही रसरङ्गमणी कवि कोकिलेश की । कंचन सी कौस्तुभ सी कामधेनु-कोटिन सी काम देनी कीरति है कल कोशलेश की ॥ ४९ ॥ शुक सनकादिक को श्रवण सुधासमान सरदशशीके सम सुन्दर सरस है। स्वच्छ क्षीरसागर ते शुचि सुरसरिता ते सुनत समीरसुत सुनिशि दिवस है ॥ सारदा सुमुख की सोहाग रसरङ्गमणी सन्तन को सुरतरु शिव-सरवस है। सुगति-सुहेतु सब सुख को सुधाम श्रुतिसाम को ललाम सीताराम को सुजस है ॥५०॥ सीताराम तत्व अति अगम परत्व रूपभेद औ अभेद वेद जानै नहीं साम है । सीताराम प्रीति रसरीति की पुनीत गीत गावत मिटत भवभीति भ्रम काम है ॥ सीताराम नाम आठौ जाम जपैं वामदेव काशीवासी जीव तासो तारत तमाम हैं। सीताराम स्वामी स्वाती मेघ रसरङ्गमणी चातक गहे सुटेक एक सीताराम हैं ॥ ५१ ॥ कैधौं राम श्यामघनजू के चारु चातक हैं कैधौं पदकंज के मधुप प्रीतिपाग हैं। कैधौं रसरङ्गमणी दास्यरस रूपवंत कै सदेह धर्म ज्ञान सोहैं सानुराग हैं ॥ कैधौं शुद्ध साधुगुण संजुत शरीर वीर कैधौं तप त्याग योग सतनु अदाग हैं। कैधौं राम प्रेमपुंज प्रगट विराजै कैधौं रामभक्त भैया जू भरत भूरि भाग हैं ॥५२॥ कैधौं रघुनन्दन को दास भक्त सेवक है कैधौं मुख्य मंत्री महामतिको-निधान है । कैधौं शूर सेनापती सुभट समरकारी कैधौं वैरिवृन्दघाती नराकार वान है ॥ कैधौं करकंज शुभकर्म को करनहारो कैधौं रसरङ्गमनी सखा प्यारो प्रान है। कैधौं इन सबही

के सारसुधा को है सिंधु कैधौं रामजू को बंधु लखन सुजान है ॥५३॥ आगे प्रेमपागे जस वन्दीवदैं जागे तिन पाछे पणवादि दुन्दुभी विशाल बाजहीं। ध्वजा फहरात घने घंटा घहरात करि सिंहनाद मोदित विख्यात वीर गाजहीं॥भरत लखन रिपुशाल रसरंगलाल चालत सुचामर सखा समाज भ्राजहीं। सोहै सीस ताज त्यों छबीलो छत्र छाज आज राम रघुराज गजराज पै विराजहीं ॥ ५४ ॥

॥ छन्द कुण्डलिया ॥ विनय ॥

प्यारे कंजहिं भानु जल-मीनहिं दीप-पतङ्ग। कुमुद चकोरहिं चन्द जिमि चन्दन मणी भुजङ्ग ॥ चन्दन मणी भुजङ्ग कुरङ्गहिं गान वीणधुनि। चातक मोरहिं मेघ महालोभी को धन पुनि॥ कामिहिं कामिनि लगै लोक परलोक विसारे। तिमि लागहु रसरङ्गमणी मन सियबर प्यारे ॥ ५५ ॥ प्यारे अमलिन को अमल कमल मधुव्रत काहिं। अजमाई औषधि सु प्रिय ज्यों रोगी मनमाहिं ॥ ज्यों रोगी मनमाहिं छाहँ आतप व्यापितु को। जल तृषितहिं प्रिय अन्न-छुधित सुत-माता पितु को ॥ सुख जीवन ज्यों जड़हिं जड़ानो घाम निहारे। तिमि लागहु रसरङ्गमणी मन सियवर प्यारे ॥ ५६ ॥ प्यारे मित्रहिं मित्र जिमि मानस हंस अधार। बालहिं खेल सुमेल चक्र चकई भानु सकार ॥ चकई भानु सकार वहार चमन बुल्बुल्को। प्यार उनीदे काहिं सोइवो जस गुल् गुल् को ॥ सातिहिं सुपति जिमि लगै पगै दोउ लोक सुधारे। तिमि लागहु रसरंगमणी मन रघुवर प्यारे॥ ५७ ॥

॥ सवैया ॥ श्रीराम अनन्यता अभिलाष ॥

हे विधि जो करिए खग वृक्ष मृगादि तो औध-विपीन मझार को । ह्व जलजंतु जिऔं पै पिऔं बरवारि सुखी सरयू सरि धार को । वाहन श्वान वनाइय जो तो सवारी सिकारि श्रीराजकुमार को । जो नर तो रसरंगमणी करो प्यार सखा रघुनन्दन यार को ॥५८॥ अन्त्यज तौ अवधेश को खास सफा करौं भोर दुआर अगार को । शूद्र तो सारकरौं सियपीय को वैश्यवनौं पुर औधवजारको ॥ जो द्विज तो रविवंशगुरू कुल ह्वै पढ़ौं रामविवाह सुचार को । छात्रि तो श्री रघुवंशहि में रसरङ्गमणी सखा राघव यार को ॥५९॥ रामसखा रसरङ्गमणी अलिहै सियके पद पंकज प्यार को । हैं लघुवंधु सु लच्छन लाल को ते नित लालत देत दुलार को ॥ है रिपुशाल को वालसहोदर भाइ सबै भरतादि कुमार को । श्री अवधेश औ अम्बन को अति छोट सुढोट है गोद खेलार को ॥ ६० ॥

कवित्त-मोसे महापापी तुम पेखे पुन्यमान होत मोसे महामानी हूं अमान होत हेरते । मोहिंसे अभागी भागमान होत गाए गुण मोसम अग्यानी होत ग्यानी नाम टेरते॥मोसे कूरकामी निहकामी अभिराम होत वामहू अवाम होत रावरेहीं फेरते । मागत असीस जानकीश जन सीसनाय जाय ना हरीश हनुमान मेरे नेरते ॥ ६१ ॥

राघव सुशीले पाहि करुणारसीले नैन हेरिए हँसीले मोसे मानस कठीले को । काया कामकीले मद माया मंतिमीले रहै रामनाम ढीले सेवै गरव गठीलेको॥लोभ लेत लीले अभै दीजिए

जसीले रसरंग जन जी ले दूध काढ़त छठीले को। पेखैं दृग पीले नामनेह के नशीले मम रक्षक वसीले कीजै हनुमत हठीले क्रो॥ ६२॥ जोगिन के नाथ सुख–भोगिन के नाथ भोगत्यागिनके नाथ रोगहर गुणगाथ हैं। ज्ञानिनके नाथ धीर ध्यानिन के नाथ चारो वानिन के नाथ दानी–वीरन के माथ हैं॥ वेदन के नाथ वेदवादिनके नाथ देव आदिन के नाथ रसरङ्गमणि साथ हैं। शिव अज नाथ औध अग जग नाथ जीव जानकी के नाथ रघुनाथ मम नाथ हैं॥ ६३॥ अवधसुधामपै सकल लोक धाम वारौं नाम वारौं और रामनाम सुधाधारपै। सीताराम लीलापै सकल ईशलीला वारैं और प्रभुताई रामप्रभुता अपारपै॥ वारौं रसरङ्ग रामअङ्ग पै अनङ्ग कोटि प्रान वारौं राम के सुभाउ शील प्यार पै। राम तनतेज पर ब्रह्मनिराकार वारौं दशौं अवतार दशरत्थ के कुमार पै॥६४॥ रामके विलास पर कोटिशत शक्र वारैं चक्र वारौं राम चाप वाण तरवार पै। राम के आराम पै आराम नन्दनादि वारौं गंगा जमुनादि सरि सरयू के धारपै॥ रामकी क्षमापै क्षमा वारौं रसरंगमनी कोटि–कल्पतरु करपंकज उदारपै। रामजूकी रानी पर रति रमा–कोटि वारौं कोटिन रमेश कौशलेशके कुमारपै॥६५॥

अथ श्रीरामनामाष्टक॥ सवैया॥

को नहिं जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहारो।
नाम प्रभाउ गजानन जानि कियो परदच्छिन दच्छ उदारो।
मूषक के पद ते महि अंकित पेखि मयूर खड़ानन हारो॥ नाम कृपा रसरङ्गमणी पितुते पहिले पुजवावत प्यारो। को नहिं

जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहाँरो ॥ १ ॥ नाम प्रभावहिं ते शिवहू अविनासि विनास करैं भव सारो । नाम सुनाय पुरी-अपनी रसरंगमनी हर मुक्ति प्रचारो ॥ नामहिं के बल खाय हलाहल नाश कियो सबको दुख भारो । को नहिं जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहाँरो ॥ २ ॥ नाम अमी शतकोटि चरित्र मथे लहि शंभु उमा उर धारो । एकहिं बार उचारत राम उचार तुलै हरि नाम हजारो ॥ जो जपि गौरि लियो रसरङ्गमणी शिव सङ्ग प्रसाद सुप्यारो । को नहिं जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहाँरो ॥ ३ ॥ नाम मरा उलटा जपते कवि कोकिल-पाप भयो जरि छारो । रामचरित्र रचे शतकोटि हरै यक आखर जो अघभारो ॥ नाम रटो रसरंगमणी कलि साधन आन न भूलि निहाँरो । को नहिं जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहाँरो ॥४॥ नामहिं ते शुक औ गणिका रसरंगमणी बसे राम अगारो । नाम हराम कह्यो जमना हरिधाम लह्यो करिकै अघछारो ॥ नामनरेश प्रताप चहूँ जुग चाम सुदाम चलावन हारो । को नहिं जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहाँरो ॥ ५ ॥ नामहिं के बल शोषि लियो मुनि-कुंभजहू जलसिंधु अपारो । नामहिंते प्रहलाद विषाद मिटो प्रगटे नरसिंह उदारो ॥ नाम जपे रसरङ्गमणी ध्रुवहू ध्रुवधाम लियो सुखसारो । को नहिं जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहाँरो ॥ ६ ॥ ध्यान कृते मख त्रेतहिं मैं प्रभु पूजन द्वापर वेद उचारो । नामहिं केवल है कलि मैं रसरङ्गमणी नहिं और अधारो ॥ नाम रटे तरिहै तरि है

सु कहैं बुध वेद बजाय नगारो । को नहिं जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहारो ॥ ७ ॥ राम सु नाम स प्रेम उपासक गावत पावत राम पियारो । नामहिं निर्गुण सर्गुन रूप प्रकाशत जापक जो रुचि धारो ॥ नाम भजे रसरंगमणी सिय राम धरैं हिय में अवतारो । को नहिं जानत राम दयानिधि है जगतारक नाम तिहारो ॥ ८ ॥ ७३ ॥ इति श्रीरामनामाष्टकम् ॥

॥ ❀ ॥ क० घनाक्षरी ॥ ❀ ॥

राम ते अधिक कृपानिधि राम नाम हैं । राम तो प्रगट त्रेता युगहीं में, रामनाम चारो युग प्रगट विराजैं अभिराम हैं । राम निज धाम दिए अवध प्रजनहीं को रामनाम नित्य भवतारक तमाम हैं ॥ राम रूप अगुन सगुन ते पृथक, उभैबोधक सु नाम यथा एकै रवि घाम हैं । रटिए पवन मन वदन सौं " रसरंग " राम ते अधिक कृपानिधि राम नाम हैं ॥ ७४ ॥ रामनाम हीन भ्राता भीति, मीत मौत सम रामनाम हीन पिता पित्त औ प्रमेह है । रामनाम हीन वेद वेदना समान, शास्त्र शस्त्रघात, संहिता कुसंहिता सी खेह है ॥ रामनाम हीन रसिकाई रसखाई सब सङ्ग रसरंगमणी अंग भंग नेह है । रामनाम संयुत सबै स प्राण ज्यों शरीर रामनाम हीन जिमि प्राण हीन देह है ॥ ७५ ॥ दिनु बिनु रामनाम दुख दीनता को धाम जाम जमजातना सों प्रहर प्रहार है । दंड कालदंड पल पीड़क उदंड क्षण क्षीणता को मंड जो न जपै नाम प्यार है ॥ ज्ञान है अज्ञान त्यों कुयोग योग नाम हीन तप ताप पाप जाग कर्म आग छार है । राम अंक हीन सब शून्य रसरंगमणी नाम अंक अंग

सब दशगुनो सार है ॥७६॥ मंगल अवध धाम सरयू ललित नाम मंगल अवधेश कौशल्या आदि माता हैं । मंगल श्रीसीताराम नाम रूप लीला धाम मंगल धनु वाण रामआयुध जनत्राता हैं॥मंगल श्रीमांडवी-भरत उर्मिला-लखन श्रुतिकीर्ति-शत्रुहन हनुमंत ख्याता हैं। मंगल रसरंगमणी सखा सखी दास भक्त मिथिला-अवध नाता मंगल के दाता हैं॥७७॥मंगल श्री रामभक्ति प्रेमा परा ज्ञानमाता मंगल श्रीसंप्रदाय शरणागति नाता हैं। मंगल श्रीरामानन्द स्वामी श्रीतुलसिदास मंगल श्री राम मंत्रराज गुरु दाता हैं॥मंगल वशिष्ठ विश्वामित्र वालमीक आदि मंगल अनन्त सन्त राम भक्त त्राता हैं । मंगल विधि विष्णु शंभु मीन आदि अवतार देहिं रसरङ्गमणी मंगल प्रभाता हैं ॥ ७८ ॥ ❋ ॥ दोहा ॥ ❋ ॥ सुकृत करै सुख चाह जौ दुसकृत तें दुख होय ॥ भजै राम रसरंगमणि भुक्ति मुक्ति चह कोय॥१॥ दुख भोगे दुसकृत घटै सुकृत घटै सुख भोग ॥ दुकृत सुकृत रसरंगमणि तजे रामपद योग ॥ २ ॥ उपजी पीरा पापते जैहै पाप नशाय ॥ सहि न जाति रघुनाथ जू रक्षा करिए हाय ॥ ३ ॥ विकल राम रसरंगमणि शरणागत फुर झूठ॥ हरिय पीर रघुवीर अब नहिं रहिए प्रभु रूठ॥४॥जय श्रीरघुवर जानकी भरत लखन रिपुसाल॥हनुमत युत रसरंगमणि हिय वसिए जनपाल ॥ ५ ॥ ❋ ॥ पद ॥ ❋ रक्षक राम कृपाल हमारे॥ तीनकाल तिहुँ लोक हिए अरु बाहेर शर-धनु धारे॥दुष्ट दैत्य दलि जो करुणाकर जन प्रहलाद उबारे ॥ वाली वली विदारि सुकंठहिं सखा सुखी किय प्यारे ॥ चौदह सहस खरादि खीसकरि दंडक मुनि रखवारे॥श-

रणागत गयो विकल विभीषण दिए अभय अनियारे ॥ मारि अनुज सुत सकुल दशानन तीन लोक दुख टारे ॥ कलि श्रीधर सुरसुरि कविरादिक संकटते किय न्यारे ॥ तई राम रसरंगमणी के पालक प्राण अधारे ॥७९॥ यक पतनी यक नाम सुगतिप्रद यक संधान--शत्रु शोषक शर । एकबेर काहि शरण तरण भव एकबेर अवलोके गे डर ॥ एकहिं मौज धनेश इन्द्र सम वहुरि कबहुँ नहिं भटकत घर घर । अग्रस्वामि एकै भजिवेको कौशलराय परम करुणाकर॥ ८० ॥ श्रीरामाग्रदासाय नमः॥ पांयन को पेखि पुनि नखन परेखि युग जंघा जानु जोहि लाग्यो लंक ललचायकै । नाभी में नहाय आयो उरमें उरायन सौं भेंटि भुजदंड गह्यो ग्रीवा गुणगाय कै ॥ चाहिकै चिवुक को निवुकि रसरङ्गमणी वदन विलोकि भयो विवस वनाय कै । लोचन निहारि रामचन्द्रजू के मेरो मन अकरिगो जुलुफ जँजीरन में जायकै ॥ ८१ ॥ पदकंज परसि परागते पुनीत भयो जोहि नख जोति जाय नूपुरमें कसिगो । ऊरू अवलोकि कटि किंकिनी सुपीतपट ताकि त्रिवलीको नाभि सुधासर धसिगो ॥ कढ़िकै उदर उर वाहु रसरङ्गमनी भेंटि ग्रीवा भूषन चिवुक विन्दु वसिगो । चितै चित्त मेरो रघुनन्दन वदन चन्द चाहत चलन मन्द हांसी फांसी फसिगो ॥८२॥ कृपासिंधु दीनबंधु मेरे स्वामी सीताराम काल कर्म गुणन सों अव न डँटाइए। सतगुरु मंत्र दिए रावरे शरण किए रावरो कहाऊं तैसो ठाटहू ठटाइए ॥ मनकी मलीनता विषय वारि मीनता निवारि झीनी वासना कुकल्पना मिटाइए। मागै रसरङ्गमणी चरण सरोज

खास नेहता निवास निज नामहीं रटाइए॥ ८३॥ जटित सु-
नीलमणि मंडित मंजीर जोति जमुना सु जोहिकै भरैंगे
भूरि भाग में। ललित ललाम तलभाग भारती की धार धोय
धोय मल रसरंग अनुराग में॥ गौर आभा ऊपर की नखन
समेत गंग भूषन तरंग शोभासलिल अदाग में। अहो कभूँ ने-
हसो नहैं हैं मेरे नैन ऐसे राघवपियारी पदपंकज प्रयाग में॥८४॥

॥ सवैया ॥ आनन श्री शशि कोटिन की सुखमा सुख-
सार सिंगार सनी हैं। श्रीफल चंपक बंधुक कुन्द से अंगन
बाग बहार बनी हैं॥ कंज सुखंजन गंजन नैन रमा रति जा-
के छटा कि कनी हैं। राम धना धन प्रान समा सियजू रसरंग-
मनी कि धनी हैं॥ ८५॥ श्रीगुरुबैन बिश्वास के बाजि चढ़
शरणागति लाय लगाम हैं। प्रीति कि पाग पुशाक है लाग
कँसे कटि फेंट निवास सुधाम हैं॥ धारे निखंग सजातिन संग
गहे धनुबान सियावर नाम हैं। लोने सखा रसरङ्गमणी अव-
धेश लला के ललाम गुलाम हैं॥ ८६॥ जोग बिराग न जानैं
कछू नित नेह के नाते सों माते अराम हैं। पांच उपास कि
आसन राखत भाँखत रामसिया मुख नाम हैं॥ चातक ज्यों घन
राघव टेक रहैं गहि औधपुरी बसु जाम हैं। लोने सखा रस-
रङ्गमणी अवधेशलला के ललाम गुलाम हैं॥८७॥ लाल लली
करकंजन लालित लोने सखान की रीति अनूठी। खात न कौनिहुँ
वस्तु दिए कहैं मीठ लगै हमैं श्रीमुख जूंठी॥ जो करि प्यार खिझा-
वत प्यारे तो स्वामिनि की दिशि बैठत रूठी। रामसखे रसरङ्ग-
मणी हँसि वेगि मनावत देत अँगूठी॥ ८८॥ राम सु धाम-

हिं वास सदा सरयू जल को करि मज्जन पानौं । जानकि जान धरे धनुवान हनू भरतादिक संजुत ध्यानौं ॥ कान सुनौं जसरामहिं को मुख राम के नामहिं को जप ठानौं । राम सिया रसरङ्गमणी प्रभु आन हितू नहिं जानौं न जानौं ॥८९॥ व्यापक व्यूह चतुर्भुज चौविस राम के रूप सबै करि मानौं । पै मन नैन न भावत और सियावर रूपहिं को हिय आनौं ॥ सिंधु को नीर सबै परि चातक स्वातिके बुन्दहिं ज्यों हठ ठानौं । राम सिया रसरङ्गमणी प्रभु आन हितू नहिं जानौं न जानौं ॥७५॥ राम स्वनाम दिनेश दिखाय कृपाकरि मो हियकंज खिलैए। सून्य असून्य में सूरति शब्द में नाद सुबिन्दु में नाम मिलैए ॥ नासिक स्वास में भौंहन पास में नैनन बैनन नाम जपैए । अंग सबै रसरङ्गमनी मन रोमन रोमन राम रमैए ॥ ९० ॥

॥ कवित्त ॥ करुणा बसीली भक्त जीवकी उसीली भव दुखकी नसीली वेदविदित जसीली हैं । वदन शशीली शोभासदन लसीली रसरङ्ग शुभशीली मति प्रीति दरशीली हैं ॥ मन्द विहसीली मंजु गौरवगँसीली पियहिय हुलसीली राम रसकी रसीली हैं। दिव्य गुणशीली नव्य नेहकी कसीली भव्य सुख बरसीली सिय स्वामिनी सुशीली हैं ॥९१॥ प्रणत उधारणी हैं विगरी सुधारणी हैं दिव्य गुण कारणी हैं टारनी कलेसकी । औगुन विसारणी हैं भक्त काज सारणी हैं सुखको पसारणी हैं प्यारनी परेशकी ॥ महल विहारनी हैं सोरहौ सिंगारनी हैं राम मनहारनी हैं धारनी रसेशकी । रसरङ्ग तारनी कृपा की कोर ढारनी हैं विरुद प्रचारनी हैं सियाजू हमेश की॥९२॥

दासखोरी भोरी देहिं भवबंध छोरि करैं भक्तके हियो श्री राम रविकी अँजोरी हैं। दामिनीसी गोरी बोरी सुखमा करोरी रति कृपा दृग-कोरि किए रसरङ्ग ओरी हैं॥ घनश्याम मोरी मुख चन्दकी चकोरी थोरी थोरी विहँसोगी लेहिं लालचित चोरी हैं। सोरहो सजोरी रामरसिकेश जोरी सिया स्वामिनी हैं मोरी मिथिलेशकी किशोरी हैं॥ ९३॥ प्यारी नैन प्यारे बसैं प्यारे नैन प्यारी वसैं उभै नैन चोरिवेको उभै नैन चोर हैं। मुख मिथिलेशजा को मधुर मयङ्क मोहे अवधकिशोर चारु चतुर चकोर हैं॥ राम घनश्याम मंजु वैन मोददैन धुनि सुनि स्वामिनी को मन नाचै मत्तमोर हैं। शोभा मकरन्द रसरङ्गमणी भृङ्ग फूले युगल कमल लहि नेह भानु भोर हैं॥९४॥ सीता सत्य शांतिते सुकंठ रामसख्य राज पायो जो देखायो पट भूषण प्रपत्यते। सीता सत्य शान्ति ते समीरसुत सिंधु नाघि शिवशैल चालनै चलायो अधिपत्यते॥ सीता सत्य शान्ति तें श्रीराम मारे रावण को राज दै विभीषणै वसाए सुखमत्यते। सीता सत्य शांति ते सु वालमीक गाए जस पाए रसरंङ्ग शांति सीता कृपा सत्यते॥ ९५॥ सीता सत्यशांति ते कुभ्रांति मिटि जाति त्यों सनेह सटिजात श्री अवध अधिपत्यते। सीता सत्य शांतिते श्रीराम निज धाम देत नाम लेत प्यार करैं अधिक अपत्यते॥ सीता सत्य शांति ते आकाशवत ब्रह्मभास खास रामरूप दीसै हिए ज्ञान मत्यते। सीता सत्य शान्ति ते सुजस रसराम गावै ध्यावै रामकान्ति सीताचरण प्रपत्यते॥ ९६॥

॥ अथ कांम कामिनी क्रूरता वर्णनम्॥

(दो०) वाधक रघुवर भक्ति के क्रोध लोभ तिय काम ॥
सब रिपु भक्षक जीव के रक्षक केवल राम ॥ १ ॥

कामहीं कसाई सुरसाई की नसाई मति गौतम की रमणी सों कुरस रचायकै। कामहीं कसाई सीस-दंडकके मार्‌यो दंड शुक्रसुता अंग संग पाप परचाय कै ॥ कामहीं कसाई निशासाई को कलंकी कियो लियो गुरुनारीमोद अत्रास मचायकै। कामिनी कुछूरी लैकै कठिन कसाई काम काटै रसरंग राम लीजिए बचायकै ॥ ९७ ॥ कुत्ता एक कानो कृशकाय बेप्रमानो पगटूट लँगरानो चलै दुखी बेकरार है। पूंछ कान हीन घाउ लागे भयो दीन कीरा परे वहुपीन बहै पीव लोहू धार है ॥ भूँखन के मारे मरै हंडी मुख धारे गरै कुतिया के पाछे फिरै तऊ द्वार द्वार है। पाहि सीताराम रसरंग लीजिए उवार बार बार मारत मरे को मूढ़मार है ॥ ९८ ॥ पाय तेरी चेतना सुचेरी की सुछाया माया काया काम बेरी मेरी-कुगति मचावती। झूंठी तिहूंकाल लागै मीठी मीचुकाल निज नैन को नचाय मेरे मनेको नचावती ॥ मास सों गढ़ाय अंग लोहू सो बढ़ाय चाम चीकनो मढाय हिए कुरस रचावती। पाहि कृपासानी रामरानी रसरंग जन सिंहिनी के सुत को सियारनी सतावती ॥ ९९ ॥ कौने पाप पुरुष के प्रगटी है नारी जग भगवान विमुख कियो है जीव मंडली। देह दुखदाई चख चीकनी दिखात पै लखात ज्ञानलोचन सों कलुष कमंडली ॥ विषै मोद मोदक सविष खाय खाय हाय मानुष मरत होत पातकी पखंड ली ॥ मौरै महामारी मोहिं प्रमदा महामलीन पाहि रसरङ्ग राम अवध-

अखंड ली ॥ १०० ॥ प्रभो प्रेमप्रद प्रिय प्रेमवैनवद हेरि प्रेम-
नैनसद पदप्रेममद प्याइए । प्यारे मोदरूप प्रेमपालक अनूप
काढ़ि माया मोह-कूपते सुजान जीव ज्याइए ॥ प्रेममग भूल
कामशूल उनमूल कीजै राम अनुकूल प्रेमझूल सों झुलाइए ।
भवप्रेम भंग करि सबसों असंगकरि भरि प्रेम अंग रसरंग अप-
नाइए ॥ १०१ ॥ वालमीक जवन अजामिल गजादिकन
नाम लिए धाम दिहो पातक विते विते ॥ गीधपितु शवरी सु-
मातु त्यों निषाद सखा वानर सुबंधु प्यारे माने हौ हिते हिते ॥
भए सुख संपति तितै तितै त्रिलोकपाति धोखेहूं में जानकीश
जोहे हौ जितै जितै । कीजै प्रीति-रोचन त्रिमोचन विपति राम
सुखी रसरङ्ग कृपालोचन चितै चितै ॥१०२॥ नाच्यों मैं न रामनेह
देखि मेह ज्यों मयूर देहके सनेह ते कुसंपाति को सांच्यों मैं ।
सांच्यों मैं न सीताराम शोभा रसरंग धाम काम क्रोध संगते
न आठौ जाम वांच्यों मैं ॥ वाच्यों मैं न वेदसाम-सार सीता-
रामजस त्यों न गुणग्राम सुन्यों वाम राग रांच्यों मैं । राँच्यों
मैं न सांचे रंग सांची रीति सांचे राम आपको न जांच्यों जग
नाना नाच नाच्यों मैं ॥ १०३ ॥ प्रेमी प्रभुनाम रटैं ज्यों पपीहा
प्यासी प्यासी और सों निरासी घनश्यामहीं सो नेम है। राम-
चन्द्र रूपध्यान लोचन चकोर करि चितवत चाहभरे छाके छवि
छेम हैं ॥ सुमिरत सीताराम सरल सुभाउ शील कृपा गुण रस-
राम जस लोभी हेम है । धन्य प्रेमपीन जलमीन जिमि राम-
लीन जीवत ते मुक्त जुक्त जे नवीन प्रेम हैं ॥१०४॥ नरतन पाय
मन विषयन हाथ बेंचे रांचे नहीं सीताराम सांचे जन सङ्ग

हैं। गुरु वैन ज्ञान कानि अङ्कुश न माने मूढ़ माया मद माते मतवारे ज्यों मतङ्ग हैं॥ भए नहीं रामके गुलाम न दृगन देखे राम दास रामधाम सरयूतरङ्ग हैं। जिन्हैं रामनाम सो न नेह रसरङ्गमणी तिन्हैं धिक धिक तान् कहत मृदङ्ग हैं॥ १०५॥ पर धन पाहन समान मन मानत जो माता सम जानत जो नर पर-नारी है। प्राणहूं के संकट में बोलत न वैन झूंटी हिंसा परद्रोह मोह त्यागे दोष भारी हैं॥ समता संतोष सतसंग गहे रसरङ्ग मनिहीं सों प्रेमपीन नामनेह बारी है। जाके हिए सिया पिया बसैं तेहिं जनकाहिं धन्यबाद वन्दना हजारन हमारी हैं॥१०६॥ दीन्हेते मिलत ऐसो गान वेद कीन्हे धर्म तीनपदहीन कलि दानहीं आधार है। दीन्हे वस होत है चराचर विचार देखो लेप के दिए मृदङ्ग बोलै अति प्यार है॥ ईश अवतारहूं कहाए लेनहारे लघु बड़े रघुराजही उदार देनहार हैं। ताते रसरङ्गमणी दीजे वित्त अनुसार देखिए दुनीमें नित्त देनो एकसार है॥ १०७॥

॥ सवैया॥ मो सम हैं कम या जगमें ठग कोह विमोह पगे अघ कामी। पै वसुजाम वसौं तवधाम जपौं मुख नाम सनेह न नामी॥ मागत हौं शरणागत हौं मन भागत सो गहिए अभिरामी। स्वामि सियावर अन्तरयामि प्रभो रसरङ्ग नमामि नमामी॥ १०८॥ सोवत आयुष खोवत हौं नहिं रोवत हौं विरही वसुजामी। गोवत हौं—अघ--औगुन ढोवत ज्ञान गुमान कि मोट निकामी॥ दोष सुनाय कहौं शिरनाय मनैं अपनाय करो अनुगामी। स्वामि सियावर अंतरयामि प्रभो रसरंग नमामि नमामी॥१०९॥ रघुनन्दनजू रसरंगमनी जनपै करिए सु दया-

धुरिया । खल काम छली हिय हूल कुशूल करै-न तिया छवि की छुरिया । धुनि ध्याय सु मूरति सूरति नाम सजै सुखधाम भजै तुरिया । अलि पंकज ज्यों पगि प्रेम पियै मन राम सिया मुख माधुरिया ॥ ११० ॥ नैन ललीके मनों नलिनी अलि लाल के लोचन हैं अनुगामी । राम सु नीरद नैनसिया पपिहा छवि प्यास पगे अभिरामी ॥ राम सु स्वामि सियाके सिया पिय-प्रानप्रिया दोउ पूरण कामी । हैं रसरङ्गमनी के जिया जुग रामसिया सुखदायक स्वामी ॥ १११ ॥ श्रीअवधेश कहैं सुत सों कुवँरेश सखान को प्यार करा करो । बाहन भूषन भावै सो देहु ठनेहु पै चूक न चित्त धरा करो ॥ हैं मुखचन्द्र चकोर तुम्हाँरे निहारे जियैं दृगते न टरा करो । कै अपनी समता सबही रसरंगमनी मन मोद भरा करो ॥ ११२ ॥

॥ सवैया ॥

लगी है लगी लगनी अगनी बिन मीत मिले हिय जोर जगी है । जगी है जगी जुलुमी जियमें रसरंगमनी भवभीति भगी है ॥ भगी है भगी कुलकानि सयानप बुद्धि अयानप हाट दगी है । दगी है दगी मति रामहिं के कर सीय कृपा कि कटाक्ष लगी है ॥ ११३ ॥ ईश सोई जो सबैकर शासक दीस सोई हरिमाया पसारो । दैव सोई जो शुभाशुभ कर्मन को फलदायक मीठहुँ खारो ॥ ब्रह्म सोई जो बड़ो सबते प्रभु व्यापक एक ते होत अपारो । राम सोई रसरंग सु स्वामि रटै मुख नाम लगै अति प्यारो ॥ ११४ ॥

॥ छन्द मंजु ॥

रामलाल के लाले लोचन ललित प्रेम के प्याले हैं । जे निज

नैनन् पान किए छबि छके मोद मतवाले हैं ॥ होत बेहोश पोसते तव करि-कृपा निगाह निराले हैं । वे निरखे रसरंगमनी मम रोवत लोचन लाले हैं ॥ ११५ ॥ सिय प्यारे दिलदार हमन पर कृपा निगाह कियाकर । प्रेम पियूष चखाय मन्द मुसक्याय दिदार दिया कर॥गिरते देखि गुनाह गर्त्त गहिबांह उठाय लिया कर । मणिरसरङ्ग अभङ्ग नेह इष्ट नाम निवास हिया कर ॥११६॥ हम बिन तुम सुखरूप दुखी हम तुमबिन मीत बिसारे हौ । हाय बिसारे मैं तुमको प्रभु तुम तो मोहिं सम्हाँरे हो । रमे सकल रसरङ्ग सियाबर मन मलीन ते न्यारे हौ । जीव जिवावन-हारे प्यारे तुम रघुवीर हमारे हौ॥११७॥माया मनमलीनता परदा आपाहि अन्तर पारे हौ । कै मैं हीं पहिरे परदा प्रभु तुम तो परदा टारे हौ। पै परदा करता हरता रसरंगमणी रखवारे हौ । जीव जिवावनहारे प्यारे तुम रघुवीर हमारे हौ ॥११८॥ नामी नाम अरूप रूप रसरङ्ग सिया हिय धारे हौ । व्यापक के व्यापक सूक्षम ते सूक्षम मन वच पारे हौ ॥ मारतंड तममोह विनाशक माया सुखते न्यारे हौ । जीव जिवावन-हारे प्यारे तुम रघुवीर हमारे हौ ॥ ११९ ॥ षट्पदी मंजु मधुर महवूव मयूषा मुखकी मोहिं पिया दे । राम श्याम अभिराम रसीले दरशन नयन हियादे ॥ सियरसना को रमन् सनेही रसना नाम सिया दे । जानकि जान सुजान-मणी-रसरङ्ग कि जान जिया दे ॥१२०॥ पारस-प्रेम पियारी के कर कृपा सु दान दिवा दे । भूखो भक्ति सुधारस भोजन प्यारे खूब खिवादे॥शंभु सु सुख लालित ललाम सुख मुख सो नाम लिवादे । राम जानकीजान मणीरसरंग कि जान जिवादे॥१२१॥दिलवर मेरे दिलपर हरदम्

दरदी विरह वियादे । श्यामल मंजु माधुरी मूरति निशि दिन ध्यान धियादे ॥ नाम प्रेमपीयूष पान प्रभु प्यासे प्रान पियादे । सियारङ्ग सङ्गी रघुनन्दन मणिरसरङ्ग जियादे ॥ १२२ ॥ लोभी धन लयलीन यथा तस रसना नाम लियादे। नव घनश्याम स्वरूप विन्दुजल दृग चातकन पियादे ॥ सुमति सुन्दरी अंग अमल अँगिया अनुराग सियादे । राम जानकीजान मणीरसरङ्ग कि जान जियादे ॥ १२३ ॥ भैया भरत भक्ति भायप अनुराग को लेश हियादे । लखन सरिस जलमीन लीनरस अंश सुलाहु लिया दे ॥ काम वालि को वधि सुकंठ सम सुख को राज दियादे । राम जानकीजान मणीरसरंग कि जान जियादे ॥ १२४ ॥ चितै कंज दृग मोहिं कृपा-कंचुक कमनीय सियादे । दयासिंधु वरबंधु हमारे प्यारे प्रीति पिया दे ॥ निज मुखचन्द चकोर अनन्दित लोचन मम लुभियादे । राम जानकीजान मणीरसरङ्ग कि जान जिया दे ॥ १२५ ॥

(सो०)-विनय षटपदी मंजु, मन मधुकर को संग लै ॥
वसै रामपद कंजु, रंजित नाम सनेह रस ॥ १ ॥

(सं०) मत्त मलिन्द मरन्द पगे जुग-पद अरविन्द कली के हैं। राम छैल छवि झुंडे आशिक गुंडे अवध गली के हैं ॥ भरे उ-छाह उमाह चाह दृग नेह निगाह थली के हैं । मणिरसरङ्ग निराले पाले लाले लाल लली के हैं॥१२६॥सीताराम शरण किय सद्गुरु रहे जरत जग लूकों के । राते नाम अमी न-सुहाते वचन बिबाद बदूकों के॥सुखी लोक परलोक शोक तजि जदपि जमाती चूकोंके। पाले हैं रसरङ्ग मणी सियराम प्रसादी टूकों के ॥ १२७ ॥ श्री गुरु-

देव पिआयो प्याला सख्य मधुर रस रेला को। जग संबंध नेह न-स्वर भो हाल मकर के मेला को॥ तजि वाधन् साधन् अवराधन् यामाहिं आठौ वेला को। मधुर सखा रसरङ्गमणी श्रीरामलाल अलूबेला को॥ १२८॥ श्रीसद्गुरु करुणाकर कीन्हे वासी कनक हवेली के। चारु चन्दमुख नयन चकोरे पगे युगल रस केली के॥ बांके सख्य दिमाके छाके कृपाकटाक्ष नवेली के। मणि रसरङ्ग दु-लारे न्यारे सियस्वामिनि अलूबेली के॥१२९॥ जब रघुवीर व्या-हि घर आए पाए सुख ससुरारी के। पिता प्रथम जिवनार नेग में मोहिं दिय रघुवर प्यारी के॥ अहैं विहारिणि के हम ताते जद्यपि अवधविहारी के। मणिरसरङ्ग दुलारे न्यारे सियस्वामिनि सुकु मारी के॥ १३०॥ प्रभु सम्बंध सख्य सतमान्यो जग संबंधहिं क-चा है। ज्ञान विराग सहित सीतापति भक्ति मोद मन मचा है। विषय विगत मदमानहीन जलमीन रामरस रचा है। मणिरसरङ्ग नामनेही रघुवंशी बच्चा सच्चा है॥१३१॥(क०) गुरुदेव कृपासिंधु श्रवण में सख्य दियो राम अंश सहचर रूप परसायो है। सोई सख्य सनबंध मंत्रराज अर्थ-भास्यो वास्यो बुद्धि चित्त हिए स-ख्य सरसायो है॥ बैनन में सख्य मन नैनन में सख्य तन अहं-कार सख्य रोम रोम हरसायो है। गुरु सन्त दया नेह मेह बरसायो रसरंगमणी सब जग सख्य दरशायो है॥ १३२॥

॥ छन्द झूलना॥ शब्द में शब्द को रूप में दृष्टि को नाम में वैन को लय करावै। राम विरहाग्नि में विन मिले लाल को तप्त ह्वै तीनहूँ तन जरावै॥ शुद्ध रसरूप रसरंगमणि इश्क में अंस माशूक के कर धरावै। सोई सारूप्य जुग सख्यता सुख लहै तरै सो आप औरन्न तरावै॥ १३३॥

(क०) श्री है संप्रदाय इष्ट जानकी श्रीराममंत्र तारक षडक्षर श्रीराजध्यान सार है। सेवक सु सेव्यभाव भक्ति-रसो पास्य मत अग्रस्वामि मारग श्रीकीलस्वामि द्वार है॥ आरज श्रीरामानुज रामानन्दस्वामी वेष कंठी छाप धनुवान प्रान रामाकार हैं। सीताराम सख्यप्रद जै श्रीकामदेन्द्रमाणि गुरु रामसख्य रूप अवध अगार है॥१३४॥ विधिजू सुजस वीज बोए विश्वबाग बीच बारि वर दै बढ़ाए मोक्ष फल काम है। सगुणावतार ब्रह्म जस रसरङ्ग थंभ काण्ड सप्तकाण्ड सर्ग पत्र अभिराम हैं॥ त्रेता ऋतुराज राम अयन रसाल वृक्ष कविता सुशाखापै विराजैं वसुजाम हैं। कूजत मधुर मधुराखर श्रीराम राम वन्दौ वालमीकि कवि कोकिल ललाम हैं१३५

(दो०)—निस्तारक कलि कुटिल जिय, राम चरित आधार।
वालमीक तुलसी भए, नाभास्वामि पुकार॥

मण्डन[१] विहारी[२] वेणी[३] तोष[४] रघुनाथ[५] शंभु[६] चिन्तामणि[७] भूषण[८] नेवाज[९] सुखसाज के। सेनापति[१०] ठाकुर[११] कविन्द[१२] शुकदेव[१३] गङ्ग[१४] नीलकंठ[१५] सुन्दर[१६] मुरारि[१७] जितराज के॥ रसिक[१८] गोविन्द कालिदास[१९] घनश्याम[२०] देव[२१] पदमाकर[२२] श्रीपति[२३] सुमेरु[२४] शिरताज के। बोधा[२५] कवि केसौ[२६] सूर[२७] जुगुल[२८] दिनेश[२९] ताई, तुलसी[३०] गोसाईं साईं सुकवि समाज के॥ १३६॥ चिदानन्द तन तेज बल ज्ञान घन राम भगति-सदन सदा अघ गंजनी को है। सन्त उपकारी शोक संकट विदारी दुखी दीनन पै कारी दया दुख भंजनी को है॥ दास रघुनायक सुकंठ को सहायक है सीय सुखदायक सुप्रीति रंजनी को है। खलन को काल पाल वाल-रसरङ्गमणी लाल अलबेलो ऐंड़दार अञ्जनी को है॥१३७॥ खलन को काल पाल

दो० ॥ संकटहरन सुकंठ के सीता सुखद कपीश ॥
राम भरत लछिमन सुहृद धरिए कर ममसीस ॥ १ ॥

(सवैया) राम कृपाल कहायकै रावरो आश अनीशन की अव कोकर। ठाकुर ठौर मैं और न जाइहौं खाइहौं तेरिहिं जूतिन ठोकर ॥ खानको राम रटान सुप्रेमहिं दीजिअ लाग कि भाजिअ रोकर। शीलनिधो रसरंगमणी जन राखिअ नैन निगाह को नोकर ॥ १३८ ॥

॥ छन्द छप्पै ॥ वन्दौं श्रीगुरुदेव-पर रामप्रियाशरणाख्य बर ॥ गुरुस्थान मुलतान त्यागि श्रीअवध सिधारे। रहे अवध मिथिला प्रयाग बहु शिष्य सुधारे ॥ सिय रघुवर रत अति कृपाल सबकौं सुखदाई॥ भक्तमाल भल भांषि अभक्तन भक्ति दिढ़ाई ॥ ज्ञाता रामरहस्य जस रसरङ्गमणी सठ कुमति हर। वन्दौं श्रीगुरुदेव-पर रामप्रिया शरणाख्य बर ॥ १३९ ॥ (कवित्त) सेत अंगराग लाए रामलाल लसैं गौर गोरी श्री किशोरी जोरी एकही प्रभाकी है। सीस ताज चान्द्रिकादि भूषन विराजैं लाजैं अंग लखि शोभा काम रति औ रमा की है ॥ आनन पै अमित हजार चन्द्र वलिहार नैनन निहार मार-मारनि मना की है। छाकी रसरङ्गमणी सुखमा सिंगारताकी कनकभवन प्रिया प्रीतम की झांकी है ॥ १४० ॥

॥ छन्द कुण्डलिया ॥ धारे श्रीगुरु सीस कर सियबर मंत्र सुनाय। सख्य भाव संबंध दै कृपा किए अपनाय ॥ कृपा किए अपनाय अवध सरयूतट-माहीं। शत उनीस छत्तीस भाद्र कृष्णाष्टमि काहीं। श्रीगुरु रामस्वरूप मोहिं सम पतित उधारे। सीताराम शरण दै मणिरस सर्वसु रङ्ग सुधारे॥ १४१ ॥

॥ कवित्त ॥ वानी धेनु धूसरी धवल रसराम जस पीहैं दूध साधु औ असाधु सीस धुनैंगे। जैसे नीर खारहूं नहान भगवान जू को सुजन सुजान पद–सुधापान गुनैंगे ॥ कैसहूं कुभाजनमें मुकुता ज्यों रामगुण लखिकै मराल मंजु कवि चारु चुनैंगे। गाल गूल कविता जुता वर्ण रामनाम सन्त त्यों पितासमान बालवैन सुनैंगे ॥ १४२ ॥ सीताराम शरण सु कीन्हे गुरुदेव दीन्हे मंत्रराज राम सख्य भाव सुखरास है। पायं सन्त सङ्ग धामवास के प्रसङ्ग–रटे नाम सउमङ्ग रामरूप प्रेम भास है॥ तुलसी गोसांई कृपा कवित अनेक समैं फुरित यकत्र लिख्यों रामभक्ति आस है। सुनहिं सुजन सीतारामजस मानि मन पूरण श्रीराम रसरंग सु विलास है ॥ १४३ ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराज सर्वेश्वर सर्वलोकाधिपति सर्वलोकशरण्य मार्तण्डवंशाऽवतंस श्रीरघुवंशशिरोमणि शिव शुक सनकादि नारदादि सेवित साकेतपुरवराधीश श्रीभरत लक्ष्मण शत्रुघ्न हनुमदादि नित्यमुक्तमण्डली मण्डन धनुर्वाणधारी श्रीसीताविहारी श्रीरामचन्द्र यशरसरङ्ग विलासं संपूर्णम् श्रीरामार्पणमस्तु॥ सम्वत् १९५८ अधिक श्रावण पूर्णिमा बुधदिने लेखन पूर्णम् श्री अयोध्यासरयूतटे प्रमोदविपिने रामरसरङ्गमणिना समाङ्कितम्॥

(श्लोक) श्रीरामं रामभक्तिञ्च रामभक्तांस्तथा गुरून्।
वाक्काय मनसा प्रेम्णा प्रणमामि पुनः पुनः ॥१॥

श्रीहनुमते नमः॥ अथ श्रीराम महापुरुष लक्षण॥ कवित्त॥ वन्दौं श्रीविदेह लली वायुलाल वालमीक जिन्ह सुने कहे अङ्ग चिन्ह चारु राम के। बोलीं श्रीविदेहजाजू जो है सांचो रामदूत कहै

गुण लक्षण तौ प्यारे सुखधाम के।।कह्यो कीस नाय सीस जानि पूँछो सानुराग अहो भाग कहौं गुण चिन्ह अभिराम के । रूपनिपुनाई के सहितहीं प्रगट भए श्यामल बरण शोभा सम कोटि काम के ॥१॥ रामजू कमलदल नैन रसरङ्गमणी आनन अमल शशिपूरन समान हैं । बृषकंध कंबुकंठ अतिसै विसाल उर लंवित सु भुजदंड धारे धनु वान हैं ॥ जीववृन्द रक्षक स्वजन वृन्द रक्षक हैं निजकर्म धर्म हू के रक्षक महान हैं।लोकमरजाद नीति करहिं करावैं सदा चारहू वरन जन रक्षक निदान हैं ॥२॥भानु सम तेजवन्त भानुबंश भूषण हैं सोम के समान-प्यारे नेह के निधान हैं । मधुर वचन सत्यवादी देवगुरु मानो विक्रमी यशीले वीर विष्णु के समान हैं॥राजा सव लोक के कुबेर के समान दानी धीर महारथी अस्त्र सस्त्र में सुजान हैं । रामवाहु छाया के सहारे में सकल लोक वसे रसरङ्गमणी करैं यश गान हैं ॥ ३ ॥ महा बुद्धिमान शीलवान महाबलवान महा-राजनीतिमान महा ज्ञानवान हैं । वेद अरु वेद अङ्ग यजुर धनुष वेद सब में विनीत ज्ञाता परम सुजान हैं ॥ साधु उपकारी शुभकर्म के प्रचारी सदा ब्राह्मणों के पूज्य अरु पूजक निदान हैं । दिव्य गुणसिंधु राघवेन्द्र रसरङ्गमणी इन्द्र ते अधिक महायश के निधान हैं ॥४॥ मुष्टि मणिवंध उर रामजू के थिर तीन वाहु औ (*)बृषण भौंहैं लंवित ललाम हैं । वालअग्र भाग (§) मुष्क जानु तीन सम सोहैं नाभिपास कुक्षि बक्ष ऊंचे अभिराम हैं॥पदरेखा(‡) लिङ्गमणि केश तीन चीकने हैं कर पद नख नैन लाले शोभाधाम हैं।

(*) छिपा अङ्ग अण्डकोश (§) अण्डकोश ही (‡) लिङ्ग का अग्रभाग

तीनहीं गँभीर नाभि गति रसरङ्गमणी, शब्द मेघ दुन्दुभी समान गुणग्राम है॥५॥ त्रिवली उदरमाहिं, जंघा लिङ्ग पीठ कंठ चारि अङ्ग ह्रस्व हियहरन ललाम के। अस्तन के-चूचक चरणतल-मध्यभाग पदरेखा नीचे रसरङ्गमणी राम के॥ तीन आवरत शिर करके अँगूठा-मूल भालहूँ में चारि चारि रेखा सुखधाम के। जानू ऊरू बाहू औ कपोल दो दो सम सोहैं दिव्य देह ऊंच चारि हांथ अभिराम के ॥ ६ ॥ युगल युगल अङ्ग चौदह सु एकसम राजैं रसरङ्गमणी प्यारे रघुनाथ के। भौंहें नासापुट ओष्ठ लोचन करण तिमि ¶ चूचक सु ‡ मणिवंध † कूरपर हांथ के॥ जानुनी बृषण कटि कटिकूल कर पद चौदहौ बराबर विराजैं शोभागाँथ के। आगे चारि चीकने सघन सम सोहैं दन्त मानो मंजु हीरक प्रभव प्रेमपाथ के ॥७॥ सिंह बृष बाघ गज चारिहूं सरिस गति सोहै रसरङ्गमणी प्यारे रघुनन्द की। § हनु मंजु मांसल अधर बिंब ∆ वंधुक से उन्नत सु नासिका सोहाई सुखकन्द की ॥ वचन वदन नख रोम त्वच पंच प्रियचीकने चमकदार दुति मन-फन्दकी। मुख मुखअन्तर अस्तन नैन जीभ तालु ओष्ठ नख कर पद छवि-अरविन्द की ॥८॥ शिर भाल कंठ कान मन पृष्ठ कर पद उर औ उदर दश बृहत सु जानिए। पृष्ठवंश बपु दृग कर-पद-अङ्गुली त्यों कर्ण नासा हस्त लिङ्ग अष्ट * वंश मानिए॥ श्री औ तेज यश ते सु व्यापित श्रीरघुवीर लोचन दर्सन

¶ अस्तन के अग्र चिन्ह ‡ नाड़ी जहां कड़े पहिनते हैं † हाथों की टिहुनी § ठोड़ी और कपोलों का मध्याभाग ∆ दुपहरिया का फूल * लम्बे

दोई सेत उर आनिए। बक्ष कुक्षि काँखैं नाँक काँधा औ ललाट षट-अङ्ग रसरङ्गमणी उन्नत पिछानिए ॥ ९ ॥ केश § असमश्रु नखैं रोमैं त्वँच ❦ गुप्त अङ्ग अङ्गुली के पँर्व दृष्टि बुद्धि त्यों विचारिए। नवौं अङ्ग सूछ्म श्रीराम के सियाजू सुनो जानौं सोई कह्यों प्रभुलक्षण अपारि ए ॥ धर्म अर्थ काम तीनौं पूर्व मध्य पर कांल सेबैं रसरंगमणी जगत उधारिए। धन सेना संग्रह निरत सत्य धर्म रत सवके अनुग्रह में रत सुखकारि ए ॥१०॥ सवही सों प्रिय बोलैं सदा रघुनन्दनजू राजा देश काल के विभाग में सुजान हैं। भ्राता सुखदाता श्रीसुमित्रासुत लछिमन अनुराग दिव्य रूप लक्षण निधान हैं ॥ विजयी विनीत गौरअङ्ग रसरङ्गमणी गुणसिंधु अनुपम रामैं के समान हैं। मंजु महापुरुष सु लक्षण सु भाषा किहौं जौन बालमीक कियो सुन्दर में गानहै ॥११॥ इत्यार्षे आदिकाव्ये श्रीवाल्मीकिरामायणे सुन्दरकाण्डे श्रीसीता-हनुमत्सम्वादे श्रीराममहापुरुष दिव्य लक्षण वर्णनस्य भाषानुवादं सम्पूर्णम् ॥ श्रीअयोध्यासरयूभ्यांनमः सं० १९६५ वै० ॥

---

§ मुख के बाल = मुखमशिरेखा। ❦ लिङ्ग ॥ शङ्का "छिपे हुए अङ्गों को श्रीहनुमान जी ने कैसे जाने" समाधान। महापुरुष प्रतिपादक शास्त्रों से जाने ॥ और श्रीस्वामिनी जी से उन अङ्गों का नाम कहना भी उचित नहीं, इसीसे आपने इतना हीं कहे कि चौदह अङ्ग द्वंद्व सम हैं, नव सूक्ष्म हैं इत्यादि, परन्तु लोगों के जानने के लिए अङ्गों के नाम लिखेगए हैं ॥ इस वर्णन में बहुतसे अङ्गों के नाम वारंवार कहे हैं सो ग्रंथान्तरों के भेद से जानना ॥ और इन श्लोकों के अर्थों में श्री भूषणकार जी तथा नागेशजी की टीकाओं में भेद पड़ता है परन्तु मुझे जहां जिस टीका का अर्थ प्रिय भाशा है तहां उसी का लिखा हूं॥

॥ ❋ ॥ अथ श्रीरामानुजाचार्य्य कृत श्रीराममंत्रार्थ श्लोक ॥ ❋ ॥

रकारार्थो रामस्सगुण परमैश्वर्य जलधिर्मकारा-
र्थोजीवस्सकलविधि कैङ्कर्य्यनिपुणः ॥ तयोर्मध्या
कारो युगुलमथ सम्बन्धमनयोरनन्यार्हम्ब्रूतेत्रिनि-
गमस्वरूपोयमतुलः ॥ १ ॥ श्रीजीवान् रमयत्यसौ
त्रिजगतां स्वानन्दकारी वपुस्तस्मै सद्विभवे करो-
मि शरणं नस्या महं देहभृत् ॥ तत्कैङ्कर्य्यप्रयोजनं
मम सदा मन्त्रे चतुर्थ्यानम इत्येवम्प्रतिपाद्यतेऽत्र
मनुनाहयर्थस्तु वेदात्मकः ॥ २ ॥

इति श्रीरामानुजाचार्य्यकृतं श्रीराममन्त्रार्थम् समाप्तम्।

अथ श्लोकार्थ कवित्व।

वीजमें रकार अर्थ राम ईश मोद धाम परम विभूति दिव्य गुण सिंधु जानिए। त्यों मकार अर्थ जीव रामस्वामि सेवा-लीन मोह ममता ते हीन ज्ञानानन्द मानिए ॥ ईश जीव वीचकी अकार जीव सों कहत राम सेवा जोग तूं न आन उर आनिए। राम मंत्र वीज तीनों वेदन को सार शुद्ध जपै रसरङ्गमणि रामध्यान ठानिए ॥ १ ॥ श्री सिया को अरु सव जीवन रमावैं निज रमनीय रूप ते त्रिलोकानन्द दानीजू। ऐसे सदवैभव श्रीरामको शरण करौं जाते जगदेह नहीं धरौं चारिखानीजू ॥ उनहीं की सेवा सौं प्रयोजन है मोहिं सदा मंत्रमें चतुर्थी औ नमह हेतु मानी जू। ऐसो यह राममंत्र-राज अर्थ वेदरूप कहे रसरङ्गमणी रामानुज ज्ञानी जू ॥ २ ॥
पटरिपु पटहू विकार महापापनको नाशक प्रकाशक सु गुणको

समाज है। षट इस्वरज षट संपति प्रपत्तिहूँ को हेतु रसरंगमणी सब सुख साज है॥ कीजै न अकाज लीजै गुरुजीतें आज राम मिलनके काज एकही उपाय आज है। दुख खग बाज भवसिंधुको जहाज मंत्रसंघ शिरताज राजै राममंत्रराज है ॥ ३ ॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यांनमः॥ अथ श्रीसीताराम पूजा पचीसी॥ दोहा॥ सिता अरु भ्रातन सहित पूजत चाहौं राम॥ मम मनमें निज मूर्ति में आइय पूरन काम ॥ १॥ इत्यावाहनम्॥ जन मन मंजुल अवधके मध्य महामणि धाम॥ सिंहासन पर राजिए राम कृपा सुख धाम ॥ २ ॥ इत्यासनार्पणम्॥ जिन पदतें गंगा भई ध्यावत जिनहिं शिवादि॥ तिनहिं धोवाइय प्रेमप्रद जानकियुत अहलादि ॥ १॥ इति पाद्यम्॥ धनुशर धर जग अभय प्रद मम रक्षक करकंजु॥ प्रक्षालनहित राम प्रभु अर्घ लीजिए मंजु ॥ ४॥ इति अर्घम्॥ मन्दास्मित युत मधुर वद वारिज वदन सुवीच॥ राम आचमन कीजिए प्रीति लता जल सींच ॥ ५॥ इति आचमनम्॥ सरयू सुजल सुगंधियुत सीय संग रसरङ्ग॥ नेहनिधान नहाइए मैं प्रक्षालौं अङ्ग ॥ ६॥ इति स्नानम्॥ नील कमल सम श्याम तन पटलै प्रद आनन्द॥ मैं पोछौं प्रभुप्रेम युत सीतापति सुखकन्द ॥ ७॥ इत्यङ्ग प्रोक्षणम्॥ कटिमंडल कटि सूत्र सह कोटि काम अभिराम॥ पीताम्बर पहिरिय प्रभो सीताम्बर सम श्याम ॥ ८॥ इति वस्त्रार्पणम्॥ रक्षक कौशिक यज्ञ वर करन यज्ञ हयमेध॥ पीत यज्ञ उपवीत प्रभु पहिरिय आनँद एध ॥ ९॥ इति यज्ञोपवीतम्॥ पीत उपरना आदि पट ऋतु अनुकूल ललाम॥

मणि कंचन भूषण विविध धारिय सीताराम ॥ १० ॥
इति वस्त्र भूषणादिकम् ॥ केसर आदि सुगंधियुत चन्दन तन रघुनन्द ॥ चन्द्रानन धारन करिय प्रद जन नयनानन्द ॥११॥ इति चन्दनार्पणम् ॥ फूल माल तुलसी सुदल अमल सुगंध रसाल॥ लीजिय प्रभु अर्पण करौं जय सिय रघुवर लाल॥१२॥इति पुष्पं तुलसीदलंच ॥ धूप सुगंधित बंधु सिय सहित करिय आघ्राण ॥ करिय त्राण रसरङ्गमणि हिय प्रसन्न प्रिय प्राण॥१३॥ इति धूपम् ॥ रघुकुल दीप सु दीप मैं करौं कृपाकी आस । सिय रघुवर लखनादि मम मानस करिय निवास ॥ १४ ॥ इति दीपम् ॥ अन्न इक्षुरस पाक पय फल नाना नैवेद ॥ रामासिया भोजन करिय प्रद प्रसाद हरि खेद ॥१५॥ इति नैवेद्यम् ॥ सरयू जल प्रिय पान करि पुनि प्रक्षालिय पानि ॥ दीजिय मणिरसरंग कहँ जूठन तानकि जानि ॥ १६ ॥ इति जलं कर मुख प्रक्षालनम् ॥ भरत लखन रिपुहन सखा परिकर हनुमत आदि॥ लीजिय राम प्रसाद रसरंगमणी अहलादि ॥ १७ ॥ इति भरतादि प्रसादान्नप्रदानम् ॥ खदिर पूग एला सुधा युत सुगंधि ताम्बूल ॥ ग्रहण करिय सीतारमण दीजिय मोहिं सुख मूल ॥ १८ ॥ इति ताम्बूलार्पणम् ॥ नीराजन चामर व्यजन वाजन मंगल नाद ॥ सीतापति आरति हरण लीजिय प्रद अहलाद ॥ १९ ॥ इति नीराजनम् ॥ जल पट वारन आरती करि आरातिहर अंग ॥ करौं कुदृष्टि निवारि पुनि पुष्पांजलि रसरंग ॥ २० ॥ इति पुष्पांजली ॥ ३ ॥
पूरव कृत युग पुंज के पद पद पातक गंज ॥ चारि प्रदक्षिण

करि विनय वन्दि राम पद कंज ॥ २१॥ इति प्रदक्षिणा॥ नमो नमो रघुवर सिया नमो नमो सिय राम ॥ त्राहि त्राहि रघुवंशमणि जय करुणा सुखधाम ॥ २२॥ नमो नमो लछिमन भरत नमो शत्रुहन नाथ ॥ नमो भक्ति हनुमंत श्री कामदेन्द्र गुरुसाथ ॥ २३॥ नहिं जानै पूजन सुविधि नहीं सप्रेम प्रणाम ॥ शरणागत रसरङ्गमणि अघ क्षमिए सिय राम ॥२४॥ इति प्रार्थना ॥ श्याम गौरि विश्राम प्रद कोटिकाम अभिराम ॥ मेरे हिय निज भवन सुख सोइय सीताराम॥२५॥ पूजा राम पचीसि यह पढ़ि पूजहिं सियराम ॥ धाम वसहिं ते धन्य जन रटहिं सियावर नाम ॥२६॥ इति श्रीसीताराम पूजा पचीसी समाप्ता ॥ श्रीमते रामानन्दायनमः ॥ अथ राम तिलक नवक॥ श्री तिकार सीता सुमधि लखन लकार सुजान॥राम ब्रह्म कं कहाति श्रुति तिलक अर्थ इमि जान॥१॥ श्रुति कह प्रभुके पदनते कल्पित भूमि निदान ॥ तिलक मृत्तिकै को करै हरिपादाङ्क प्रमान ॥२॥ अंगुल अंगुल मोट दोउ चरण अंक की रेख ॥ युग अंगुल मधि संधि तजि तहँ धारै श्री बेख ॥३॥ चतुरंगुल चौड़ा तिलक उत्तम भाषत संत ॥ करै तिहाई नाकते उर्द्धकेश पर्यंत ॥४॥ दहिने वाँए तिलक के विधि शिव श्रीहरि वीच ॥ ताते मध्यन लेपई लेपै सो अति नीच ॥५॥ त्रय अंगुल मध्यम कहत अंगुल दुइ अधमर्थ॥ दुइ अंगुल ते कम तिलक—विस्तर जानहु व्यर्थ॥६॥ रामतिलक विन भूत सम दरशत भाल कुरूप ॥ तिलक सहित रसरङ्गमणि शोभित साधु स्वरूप ॥७॥ तिलक दुहूँ दिशि धारई सीताराम सु नाम॥प्रभुना-

माङ्कित भालके मिटत कुभाग निकाम॥ ८ ॥ रामायुध वाएं धनुष दहिने भुज युग वान॥ शिर धनु शर मुद्रा युगल धारै भक्त सुजान॥९॥ श्रीरामानन्दीय यह तिलक नवक रसरङ्ग॥ यहि विधि धारै तिलक तन जपै नाम सउमङ्ग॥ १० ॥

॥ इति श्री रामतिलक नवक दोहाख्यं संपूर्णम्॥

॥ दोहा॥ जिमि रघुवर मम करम में लिख्यो भोगदुख रास॥ तिमि कृपाल तुम करम में लिख्यो मोर दुख नास॥ १॥ राम कृपा करि देहु हिय, नयननि अपनो भाउ॥ मैं तैं मम तव मेटि-दुख आपहि आप देखाउ॥ २॥

(कवित्त) पाञ्चाल जन्म भयो मुलतान शिष्यभए सुमिरि स्वरूप चलि अवध में आए हैं। सीताराम रसिकन्न संग पाय पाए निधि सिया सिधि देश धाम मिथिला सिधाए हैं॥ सीता धाम सुखलहि जुगल प्रियादिकन सीताराम संत जस सुने औ सुनाए हैं। "रसरंग" परगुरुशरण श्रीराम प्रिया पंचभूत त्यागि राम हिए सो लगाए हैं॥ १॥ जन्महीं ते जानकीश जोग अनुरागे जगभोग तिय त्यागे रामरूपगुरु पाएहैं। गलता स-मीप सियभाविक श्रीचन्द्र अली संग भावपाय पुनि अवध में आए हैं॥ सिया रामशरण, श्रीराघवेन्द्र सखा, किए मुख्य शिष्य मानों शशि सूरज सोहाए हैं॥ श्रीरामप्रियाशरण जू रसरंग पर गुरु पंचभूत त्यागि राम धाम को सिधाए हैं॥ २॥ मिथिला अवध प्राग चित्रकूट अंतर में विचरे विराग अनुराग उमगाएहैं। भक्तमाल भाँषिकै अभक्तन कों भक्तकिए दिए राममंत्र मद्यमांस ते छोड़ाए हैं॥ बहुकाल वपु राखि नाखिकै प्रयाग, परलोकको

पयान जानि अवधमें आएहैं। श्रीराम प्रियाशरणजू रसरङ्ग पर गुरु पंचभूत त्यागि राम धाम को सिधाए हैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ शत उनइस तिरपन अशित द्वादशि भौम अषाढ़ ॥ परगुरु गवने रामपुर तन ताजि सरजू बाढ़ ॥ १ ॥

❋ (छप्पै) ❋ श्री कामदेन्द्र गुरु सुहृदरस आवेशी एकै प्रवल ॥ राघवेन्द्र वरसखा भुवन विख्यात सोहाए। दिव्य रूप अनुभाव याहितन प्रगट देखाए॥ श्रीयुत सीताराम नाम प्रिय उचरत आनने। वाल ब्याह तजि चरित वनादिक सुनत न कानन॥ सिय राम रसिक सम्बंध दै शिष्य किए रसरंग भल। श्री कामदेन्द्र गुरु सुहृदरस आवेशी एकै प्रवल ॥ ४ ॥ (क०) सम्वत उनीसशत साठ में कुवाँर मास सुकल परीवा वार मंगल विचारे हैं। अवध सुधाम में प्रभात समै सावधान मणिरसरंग्र नाम युगल उचारे हैं॥रामविरहानल में तीनौं तन जारि पाय दिव्यरूप सीतारामध्यान उर धारे हैं। स्वामी जी श्री राघवेन्द्रसखा कामदेन्द्रमणि सबलोक त्यागि रामधाम को पधारे हैं ॥ ५ ॥ छप्पै ॥ श्री अग्रदास अव्यग्रमन अग्र उपासक राम सिय ॥ अष्टयाम कैङ्कर्य्य चाह तन मन में धारयो। कियों भक्ति रस प्रगट गूढ़ प्रभुतत्व उचारयो ॥ ध्यान मंजरी सरस रसिकमन प्रवाह्यो। सीताराम अनन्य भाव त्रयविधि निर्वाह्यो ॥ पूर्वाचारर्ज रीति रसरङ्गमणी हित दामहिय। श्री अग्रदास अव्यग्रमन अग्रउपासक राम सिय ॥ ७ ॥ श्री सीतारसरंगविहारीभ्यांनमः ॥ भव भाव विनिर्मुक्तान् भगवद्भाव संयुतान् ॥ सुभक्ति निर्भरान् भक्तान् भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ इतिशुभम् ॥

श्रीरामरसरङ्गमणिजी कृत

पुस्तकों के नाम और मिलने का मुकाम दाम ।

श्रीरामस्तवराज की भावप्रकाशिका टीका बड़ी	|=)
श्रीरामध्यानमंजरी सटीक	≡)
श्रीसीतारामायण (रामलीला सम्वाद कवित्त)	|=)
श्रीराममानसी पूजा (अष्टयाम सेवा) वार्तिक	≡)
श्रीसीतारामशोभावली और रामप्रेमपदावली	=)||
श्रीसरयूरसरङ्गलहरी–कवित्त (७०)	=)
श्रीसीताराम सुखमा विलास (नखशिख) क० (७३)	=)
श्रीरानामयशविलास कवित्त (६४)	=)
श्रीरामानन्दयशावली-चौपाई, दोहा में	=)
श्रीजानकीयशावली-चौपाई, दोहा में	=)
श्रीहनुमतयशतरंगिनी-चौपाई, दोहा में	=)
श्रीरामरसरङ्ग दोहावली	–)||
श्रीसीताराम वर्ष विलास	–)||
श्रीरामप्रियपंचरत्न	–)||
श्रीरामायण बाराखड़ी और भाष रामरक्षास्तोत्र	–)||
श्रीसीताराम झूलाविलास	–)
श्रीरामरसरंगविलास	–)||
श्रीराम झाँकी विलास	–)
श्रीरामशतवन्दना, दोहा	–)||

बम्बई बुकसेलर

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द की दुकान पर

जि० फैजाबाद, श्रीअयोध्याजी ।